हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 17 मई 2026

11 बिजलीघर का किया घेराव, जेई के आश्वासन ...

12 ग्रामीण सफाईकर्मियों की हड़ताल 20 तक बढ़ी...

सीबीएसई 12वीं के परीक्षा परिणामों में आरपीएस के होनहारों ने फिर छुआ सफलता का शिखर

-10वीं में आरपीएस के 64 विद्यार्थियों ने 99 से अधिक अंक प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठता की पताका लहराई

-जेईई मेन में 54 विद्यार्थियों ने 99 परसेंटाइल से अधिक अंक प्राप्त कर बिखेरी प्रतिभा की चमक

-आरपीएस की स्वाति 99.6, ईप्सा डागा 99.2, अक्षिता धीमान 99, वनीषा जैन 98.8 प्रतिशत अंकों के साथ 12वीं के परिणाम में इंडिया के टॉप रैंकर्स में शामिल -जेईई एडवांस्ड के लिए आरपीएस के 633 में से 456 विद्यार्थियों ने 72 प्रतिशत की सक्सेस रेट से क्वालीफाई किया

महेंद्रगढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सर्वोच्चता और गुणवत्तापूर्ण अध्यापन के लिए विख्यात आरपीएस ग्रुप ऑफ स्कूल्स ने एक बार फिर नया इतिहास रच दिया है। शैक्षणिक सत्र 2025-26 के परीक्षा परिणामों में संस्थान के विद्यार्थियों ने सीबीएसई 12वीं, 10वीं और जेईई मेन जैसी चुनौतीपूर्ण परीक्षाओं में प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। इस वर्ष सीबीएसई के 12वीं के परीक्षा परिणाम में साइंस (मेडिकल व नॉन मेडिकल), कॉमर्स एवं ह्यूमैनिटीज संकाय में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए अंकों का शिकार शिखर छुकर आरपीएस का नाम देश में रोशन किया।आरपीएस के सीईओ इंजी. मनिष राव ने बताया कि छात्रा स्वाति सिंह ने 12वीं में 99.6 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान, छात्रा इप्सा डागा ने 99.2 प्रतिशत अंकों लेकर द्वितीय जबकि वनीषा जैन ने 98.8 प्रतिशत का बेहतरीन स्कोर प्राप्त किया। वहीं छात्रा अक्षिता धीमान ने 99 प्रतिशत अंक हासिल कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। संस्थान के 22 प्रतिभावान विद्यार्थियों ने 98 प्रतिशत से अधिक और रिकॉर्ड 153 छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल कर अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता को साबित किया है। इसके अलावा, स्कूल के कुल 458 विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों में 100 में से 100 अंक हासिल कर परफेक्ट स्कोर का शिखर छुआ, जो स्कूल के शानदार मार्गदर्शन और बच्चों की कड़ी मेहनत को दर्शाता है।

- आरपीएस सीबीएसई 10वीं के परीक्षा परिणामों में भी बना सिरमोर

10 वीं कक्षा में भी प्रथम तीन स्थानों पर आरपीएस के विद्यार्थियों का पूरी तरह कब्जा रहा। समूह में प्रथम स्थान पर दिव्या यादव, अदित्री, अवनी यादव, रिद्धिमा यादव और आदित्य वशिष्ठ ने 99.6 प्रतिशत अंकों के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष स्थान पाया। समूह में द्वितीय स्थान पर ओनवी, संस्कार सिंगला, हेमांश गोला और देवीक मुदगिल ने 99.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए, जबकि तृतीय स्थान पर समर तोमर, दिव्यांश, अविनव, आरोही वैश, वृष्टि, नैतिक गौचर, तनव जैन, अमूल्य बागौतिया और तिक्षा राज यादव ने 99.2 प्रतिशत अंकों के साथ अपनी चमक बिखेरी। विद्यालय की अन्य उपलब्धियों में 64 विद्यार्थियों का 99 प्रतिशत से अधिक व 757 विद्यार्थियों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर पूरे भारत में अपनी प्रतिभा का जलवा बिखेरा वहीं आरपीएस के 493 विद्यार्थियों का विभिन्न विषयों में 100 में से 100 अंक प्राप्त करना एक बड़ी उपलब्धि है।

-आरपीएस का जेईई एडवांस के लिए क्वालीफाई का सक्सेस रेट 72 प्रतिशत

जेईई मेन में आरपीएस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जेईई एडवांस के लिए 72 प्रतिशत सक्सेस रेट से क्वालिफाई करवाकर अपना दबदबा बरकरार रखा। आरपीएस समूह के 633 विद्यार्थियों में से 456 विद्यार्थियों ने 72 प्रतिशत की सक्सेस रेट से क्वालीफाई किया। जेईई मेन 2026 में मयंक कुमार 99.957 व भव्य सतिजा ने 99.95 परसेंटाइल हासिल कर संस्थान का मान बढ़ाया। इनके साथ सुमित यादव 99.92, आर्यन श्योराण 99.89 और विनीत कुमार 99.88 परसेंटाइल के साथ टॉप पांच में जगह बनाई।

आरपीएस समूह की चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे बच्चों ने अपनी कड़ी मेहनत और अनुशासन से आज यह सिद्ध कर दिया है कि संकल्प यदि दृढ़ हो तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। विशेषकर 12वीं कक्षा में बेटियों का यह ऐतिहासिक प्रदर्शन नारी सशक्तिकरण की एक जीती-जागती मिसाल है। आरपीएस परिवार प्रत्येक विद्यार्थी के उज्ज्वल भविष्य और उनके सपनों को नई उड़ान देने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहेगा ग्रुप के सीईओ इंजीनियर मनीष राव ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि आरपीएस ग्रुप केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि भविष्य के सफल नेतृत्वकर्ताओं को तैयार करने की एक प्रयोगशाला है। हमारे विद्यार्थियों ने न केवल किताबी ज्ञान, बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं में भी अपनी तार्किक क्षमता का उत्कृष्ट परिचय दिया है। 12वीं, 10 वीं और जेईई के यह परिणाम हमारी आधुनिक शिक्षण पद्धतियों और शिक्षकों के अथक प्रयासों का ही मधुर फल हैं ग्रुप के डिप्टी सीईओ कुनाल राव ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि यह गौरवपूर्ण उपलब्धि विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के आपसी सहयोग और अटूट विश्वास का परिणाम है। 12वीं कक्षा के परिणामों ने जिस प्रकार से शैक्षणिक मानकों को नया शिखर दिया है, वह आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। आरपीएस समूह निरंतर नवाचार और तकनीक के साथ शिक्षा के स्तर को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने का प्रयास करता रहेगा। (ADVT.)

महंगाई को लेकर ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन का फूटा गुस्सा

पेट्रोल व डीजल के रेट बढ़ाने पर फूंका प्रधानमंत्री का पुतला

खरीफ फसलों की एमएसपी में बढ़ोतरी को ऊंट के मुंह में जीरे के समान बताया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

पेट्रोल-डीजल के रेट बढ़ाना महंगाई का एक और प्रहार और खरीफ फसलों के दामों में बढ़ोतरी ऊट के मुंह में जीरा के समान है उक्त शब्द कहते हुए इसके खिलाफ ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के पदाधिकारियों ने गांव निगाना में विरोध स्वरूप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला फूंका व विरोध जताया। विरोध के इस मौके पर संगठन के जिला प्रधान रोहतास सिंह सैनी ने कहा की खरीफ फसलों की एमएसपी में बढ़ोतरी को ऊंट के मुंह में जीरा के समान है। वहीं उन्होंने पेट्रोल-डीजल के दामों में बढ़ोतरी को जनता पर महंगाई का एक और प्रहार कहा।

जिला सचिव बस्तीराम ने कहा कि सरकार ने खरीफ फसलों के दामों में धान के 72 रु, मक्का के 10 रु व मूंग के 12 रु की बढ़ोतरी को किसानों के साथ भद्दा मजाक कहा। क्योंकि केंद्र सरकार ने किसान आंदोलन के दौरान लिखित में आश्वासन दिया था कि हमारी सरकार सीटू 50 प्रतिशत पर फसल खरीद का कानून बनाएगी जिससे किसानों की 2022 तक आय दोगुनी हो जाएगी। लेकिन सरकार अब वादे से मुकर गई है। जिससे किसानों को फसलों के पूरे दाम ना मिलने के कारण सड़कों पर आ करके आंदोलन करना पड़ रहा है। आये दिन खाद, बीज, दवाई, औजार वपेट्रोल-डीजल के दामों में बढ़ोतरी से खेती में लागत खर्च बढ़ रहा है इससे किसान के लिए खेती घाटे का सौदा बन चुकी है। प्राकृतिक आपादाओं से भी हर साल किसानों की पक्की-पकाई फसल बर्बाद हो जाती है। प्राइवेट बीमा कंपनियां मुआवजा देने से हाथ खडे. कर देती हैं। सरकार कुछ मुआवजा देती है तो वो इतना कम होता है कि जिससे नुकसान की भरपाई नहीं होती और जो सरकार मुआवजा देती है सालों लग जाते हैं। जिससे किसान कर्ज बंधुआ हो जाता है और आत्महत्या तक करने को मजबूर हो जाता है। संगठन के जिला कमेटी सदस्य महेंद्र सिंह कटारिया ने बताया कि आये दिन सरकारें देशी-विदेशी कम्पनियों के स्वार्थ में किसानों-मजदूरों पर अनाप-शनाप कानून थोंपती रहती हैं। इन सब के कारण किसानों-मजदूरों की परेशानी कम होने की बजाए और ज्यादा बढ़ जाती है। यदि देश का किसान-मजदूर, छात्र-नौजवान जब अपनी जायज़ मांगों को लेकर सड़कों पर उतरता है तो उन पर पुलिस भूखे भेड़िये की तरह टूट पड़ती, यहां तक की महिलाओं तक को भी नहीं बक्सा जाता। उल्टा उन पर झूठे मुकदमे बना कर जेलों में ठूंसने का काम करती हैं। इन सब बातों से यह सिद्ध होता है कि ये सरकारें पूंजीपतियो के हित में काम करती हैं और आम जनता के खिलाफ जनविरोधी कानून बनाती हैं।

हमारा संगठन आल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन सरकार से मांग करता है कि किसानों को लागत खर्च से डेढ़ गुणा फसलों के दाम दिये जाएं। बढ़ाए गयेपेट्रोल-डीजल, रसाई गैस व अन्य चीजों के दामों में बढ़ोतरी को वापिस लिया जाए। कर्ज समाप्त किये जाएं, बिजली की प्रीपेड स्मार्ट स्कीम रद्द की जाए, छात्र-नौजवानों को रोजगार की गारंटी दी जाए, पेपरों में पेपर लीक पर रोक लगाई जाए आदि मांगों को पूरा किया जाए। इस मौके पर सुखबीर सिंह, दीप कुमार, धर्मवीर, राजकुमार बसिया, मनफूल सूबेदार, फतेह सिंह, राजेंद्र सिंह, चान्द राम, दलबीर सिंह, रमेश नंबरदार आदि मौजूद थे।

तोशाम। पेट्रोलियम पदार्थो की कीमत बढाने के विरोध में पुतला फूंकते हुए। फोटो : हरिभूमि

धान के 72 मक्का के 10 और मूंग के 12 रुपये की बढ़ोतरी को किसानों के साथ भद्दा मजाक: बस्तीराम

भुरटाना के स्कूल का परिणाम शत प्रतिशत

बवानीखेड़ा। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित सेकेंडरी परीक्षा परिणाम में राजकीय उच्च विद्यालय भुरटाना के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। विद्यालय के कुल 20 विद्यार्थियों ने बोर्ड परीक्षा दी, जिनमें से 6 विद्यार्थियों ने मेरिट प्राप्त कर विद्यालय की उपलब्धियों में नया अध्याय जोड़ा। छात्रा निशा पुत्री जय भगवान ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालय इंचार्ज द्वारा निशा को मिठाई खिलाकर सम्मानित किया गया तथा उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। खुशी 86.8 प्रतिशत, रितिका 85.2 प्रतिशत, रेहा 82.8प्रतिशत, ईशा 81.4प्रतिशत, वंशिका 81.0प्रतिशत हासिल किए। विद्यालय परिवार ने सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

द्रोणाचार्य स्कूल में निधि रही दसवीं में अव्वल

चरखी दादरी। दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में द्रोणाचार्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गोविन्दपुरा के विद्यार्थियों ने नए कीर्तिमान स्थापित किए। स्कूल के 69 बच्चों ने परीक्षा दी। परीक्षा परिणाम में शत प्रतिशत रहा। निधि ने 97.8 अंकों के साथ हरियाणा प्रदेश में 11वां स्थान हासिल किया। स्कूल के 35 बच्चे 90 प्रतिशत से 97.2 प्रतिशत तक रहे । कुल 63 बच्चों ने मैरिट में स्थान पाया। छात्रा लेनिका सिंघानी ने 97.2 प्रतिशत, संजीता ने 96.8 प्रतिशत, नैना भाण्डवा ने 96.8 प्रतिशत , नेहा पहाड़ी ने 96.2 प्रतिशत , तनुषा आर्यनगर ने 95.2 प्रतिशत सोनम गोविन्दपुरा ने 95 प्रतिशत , पूजा बारवास ने 95.4 प्रतिशत व सानवी खोरडा ने 95.4 प्रतिशत अंक हासिल किए। स्कूल प्रबंधक द्वारा 90 प्रतिशत से अधिक अंक लेने वाले बच्चों को स्टाफ सदस्यों द्वारा सम्मानित किया गया।

शिव स्कूल में 27 विद्यार्थी मेरिट सूची में

■ विज्ञान संकाय की छात्रा ईशा ने सर्वाधिक 96 .2 फीसदी अंक अर्जित किए

लोहारू। हाल ही में घोषित हुए हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के 12वीं और दसवीं कक्षा के परिणामों में फरटिया ताल स्थित शिव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के सफलता का परचम लहराया है। 12वीं कक्षा में विद्यालय के 14 और दसवीं कक्षा में 27 विद्यार्थियों ने मेरिट में स्थान हासिल करके विद्यालय का नाम रोशन किया है। सभी विद्यार्थियों को स्टाफ सदस्यों ने बधाई दी है। विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष ऊषा और प्राचार्य अनीता ने बताया कि 12वीं कक्षा में विज्ञान संकाय की छात्रा ईशा पुत्र राजकुमार ने सर्वाधिक 96.2 फीसदी अंक अर्जित कर अव्वल स्थान हासिल किया है तथा 14 विद्यार्थियों ने मेरिट के साथ परीक्षा पास की है। दसवीं कक्षा में सौम्या गर्ग पुत्र पंकज गर्ग ने सर्वाधिक 98.4 फीसदी अंक हासिल कर प्रथम स्थान हासिल किया है। इसके अलावा सुमित पत्र विनोद ने 97 फीसदी, मीनू पुत्री बंसीलाल ने 96.4 फीसदी अंक अर्जित कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। दसवीं कक्षा में 27 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में जगह बनाई है। विपिन शर्मा सहित स्टाफ सदस्यों ने सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों को बधाई दी है।

जनता की समस्याओं का त्वरित समाधान सरकार की प्राथमिकता

विधायक सुनील सांगवान ने अपने आवास पर सुनीं लोगों की शिकायतें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

विधायक सुनील सांगवान ने शनिवार को दादरी स्थित अपने आवास पर क्षेत्र के लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। इस दौरान बड़ी संख्या में पहुंचे लोगों ने क्षेत्र से जुड़ी विभिन्न समस्याओं, सुझावों एवं जनहित के मुद्दों को विधायक के समक्ष रखा। विधायक ने संबंधित अधिकारियों को कई समस्याओं के समाधान के लिए मौके पर ही आवश्यक निर्देश भी दिए। विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि जनता से सीधा संवाद करना उनके सार्वजनिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। लोगों की समस्याओं को सुनकर उनका प्राथमिकता के आधार पर समाधान करवाना ही उनकी कार्यशैली का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र का कोई भी नागरिक अपनी मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए अनावश्यक परेशान न हो, इसके लिए सरकार और प्रशासन पूरी गंभीरता से कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजनीति उनके लिए केवल एक पद नहीं, बल्कि जनसेवा का पवित्र माध्यम है। क्षेत्र की जनता का विश्वास और सहयोग ही उन्हें लगातार विकास एवं जनकल्याण के कार्यों के लिए प्रेरित करता है। विधायक ने भरोसा दिलाया कि क्षेत्र के विकास, मूलभूत सुविधाओं के विस्तार और लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए वे निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

22 सितंबर तक चलेगा मतदाता पुनरीक्षण का कार्य : उपायुक्त

बीएलओ 15 जून से 14 जुलाई तक जाएंगे घर-घर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जिला निर्वाचन अधिकारी साहिल गुप्ता ने बताया कि निर्वाचन आयोग ने मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी, व्यापक एवं सहभागी बनाने के लिए विशेष गहन पुनरीक्षण कार्य शुरू किया है। हरियाणा में एक जुलाई 2026 को आधार तिथि मानकर मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण किया जाएगा। विशेष पुनरीक्षण का प्रशिक्षण पांच से 14 जून तक करवाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस तीसरे चरण में हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ सहित 19 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मतदाताओं के विवरण का सत्यापन किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि 15 जून से 14 जुलाई तक बीएलओ घर-घर जाकर पुनरीक्षण कार्य करेंगे। 14 जुलाई तक मतदान केंद्रों का रेशनलाइजेशन यानि युक्तिकरण किया जाएगा और 21 जुलाई को मतदाता सूची ड्राफ्ट का प्रकाशन किया जाएगा। 21 जुलाई से 20 अगस्त तक संबंधित दावे व आपत्तियां ली जाएगी तथा 18 सितंबर तक दावे एवं आपत्तियों का निपटारा किया जाएगा। अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 22 सितंबर 2026 को किया जाएगा। गुप्ता ने बताया कि निर्वाचन आयोग के अनुसार एसआईआर फेज-तृतीय का शेड्यूल जनगणना की मौजूदा हाउस लिस्टिंग प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए तय किया गया है।

आनंद स्कूल में होनहारों को किया सम्मानित

बवानीखेड़ा। मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में कक्षा 12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डीईओ हांसी विनोद कुमार द्वारा की गई। कार्यक्रम के दौरान मेरिट में आने वाले सभी विद्यार्थियों का मंच पर स्वागत एवं सम्मान किया गया। कॉमर्स संकाय में आयुषी ने 96.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। नॉन मेडिकल संकाय में करण यादव ने 95.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए, जबकि कला संकाय में श्रुति चौधरी ने 94.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। मेडिकल संकाय में करण ने 91.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। प्रिंसिपल नीतीश मिश्र ने सभी मुख्य अतिथियों एवं अभिभावकों को विद्यालय के उत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के बारे में जानकारी दी।

बढ़ती महंगाई व बेरोजगारी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन 19 को

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

सरकार की गलत नीतियों के कारण आम जनता पर लगातार आर्थिक बोझ बढ़ता जा रहा

बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, पेपर लीक मामलों तथा युवाओं के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ 19 मई को कांग्रेस का जिला स्तरीय विरोध जिला अध्यक्ष सुशील धानक की अध्यक्षता में किया जाएगा। जिला अध्यक्ष सुशील धानक ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान भाजपा सरकार की गलत नीतियों के कारण आम जनता पर लगातार आर्थिक बोझ बढ़ता जा रहा है।

पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस सहित घरेलू उपयोग की वस्तुओं के दाम लगातार आसमान छू रहे हैं, जिससे गरीब, मजदूर, किसान, कर्मचारी और मध्यम वर्गीय परिवारों का जीवन बेहद कठिन हो गया है। सरकार महंगाई पर नियंत्रण करने में पूरी तरह विफल साबित हुई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश और देश का युवा आज बेरोजगारी से परेशान है। भर्ती प्रक्रियाओं में लगातार भ्रष्टाचार और धांधली के मामले सामने आ रहे हैं। नीट जैसी महत्वपूर्ण परीक्षाओं के बार-बार पेपर लीक होने से लाखों मेहनती विद्यार्थियों का भविष्य अंधकार में धकेला जा रहा है।

आध्यात्मिक समागम में उमड़ा जनसैलाब

■ परमपूज्य ब्रह्मलीन कृष्णदास महाराज की 33वीं पुण्यतिथि मनाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

छोटी काशी के नाम से विख्यात भिवानी में शनिवार को अलौकिक आध्यात्मिक समागम का आयोजन किया। यह भव्य आयोजन परमपूज्य ब्रह्मलीन कृष्णदास महाराज की 33वीं पुण्यतिथि पर हुआ।

सोमवारी माता मंदिर के समीप स्थित प्राचीन श्रीश्योलालपुरी शिव मन्दिर में इस समागम में भिवानी और आसपास क्षेत्रों से भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़े, जिससे पूरा परिसर भक्तिमय जयकारों से गूंज उठा। इस दिन को पूरी श्रद्धा, निष्ठा एवं सेवाभाव के साथ मनाने के लिए श्रीश्योलालपुरी शिव मन्दिर समिति और भक्तों द्वारा पिछले कई दिनों से व्यापक तैयारियां की जा रही थीं। महामंडलेश्वर साध्वी करूणागिरी महाराज ने बताया कि शनिवार को दिनभर धार्मिक अनुष्ठानों की एक पवित्र श्रृंखला चली। उन्होंने बताया कि दिन की शुरुआत प्रातः 7 बजे सात्विक एवं ऊर्जावान माहौल में हुई। सबसे पहले यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें विद्वान आचार्यों द्वारा किए वेदमंत्रों के उच्चार से पूरा वातावरण शुद्ध और सकारात्मक ऊर्जा से भर गया। विश्व कल्याण और लोक-हित की कामना के साथ आहुतियां डाली।

श्रीसनातन परंपरा का निर्वहन करते हुए समागम में शक्ति स्वरूपा कन्याओं का विशेष पूजन किया। मंदिर परिसर में छोटी-छोटी कन्याओं को साक्षात मां दुर्गा का रूप मानकर उनके पैर पखारे, उन्हें तिलक लगाया गया और रक्षा सूत्र बांधकर आशीर्वाद लिया। इसके उपरांत सभी कन्याओं को अत्यंत श्रद्धापूर्वक सुरुचिपूर्ण भोज करवाया। कन्या पूजन के बाद भंडारे का शुभारंभ हुआ, जो देर शाम तक अनवरत चलता रहा।

राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर चलाया अभियान

लोहारू। उप नागरिक अस्पताल में राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा लोगों को डेंगू बीमारी के लक्षण कारण व बचाव के बारे में जानकारी दी गई। एसएमओ डॉ. ओमप्रकाश डूडी ने बताया कि डेंगू बीमारी से बचाव के लिए लोगों को अपने आसपास गंदा पानी जमा नहीं होने देना चाहिए। उन्होंने लोगों से अपील की कि वह घरों में कूलर व पानी की टंकियों की समय-समय पर सफाई करते रहे तथा उन्हें ढक कर रखें। उन्होंने बताया कि यदि किसी व्यक्ति को भी कंपकंपी के साथ बुखार, जोड़ों में दर्द, उल्टी, शरीर में ऐंठन, आंखों के पीछे दर्द, सिर दर्द हो तो वे तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर डेंगू की जांच अवश्य करवाएं। डॉ. डूडी ने लोगों से डेंगू को खत्म करने में जन सहयोग की अपील की तथा राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर एमओ डा. सुधाकर, डा. खुशबू, स्वास्थ्य निरीक्षक सुमेर सिंह, अजय दहिया, अमित वालिया, सुशीला देवी सहित स्वास्थ्य विभाग के कर्मियों का सहयोग रहा।

बिना काम किए हर महीने आएगी नियमित इनकम

एसआईपी के अलावा और भी हैं निवेश के बेहतर तरीके

बिना बिजनेस किए भी बन सकती है पैसिव इनकम

कम जोखिम में स्थिर आय चाहते हैं तो ये विकल्प खास

एफडी, बॉन्ड्स व आरईआईटीएस से हर माह हो सकती है कमाई

बाजार जोखिम के बावजूद निवेशकों में बढ़ा डिविडेंड स्टॉक्स का क्रेज

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

आज के समय में हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी कमाई का एक हिस्सा ऐसी जगह निवेश हो, जहां से भविष्य सुरक्षित होने के साथ-साथ नियमित मासिक आय भी मिलती रहे। बढ़ती महंगाई, नौकरी की अनिश्चितता और रिटायरमेंट की चिंता के बीच लोग अब केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। आमतौर पर लोग एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान को निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका मानते हैं, लेकिन इसके अलावा भी कई ऐसे विकल्प मौजूद हैं जो हर महीने नियमित कमाई देने में मदद कर सकते हैं। सही योजना और जोखिम क्षमता को ध्यान में रखकर निवेश किया जाए तो हर महीने अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। ऐसे में जानिए एसआईपी के अलावा कई ऐसे स्मार्ट विकल्पों के बारे में, जो लंबे समय में संपत्ति बढ़ाने के साथ नियमित इनकम का मजबूत जरिया बन सकते हैं।

म्यूचुअल फंड एसडब्ल्यूपी

एसडब्ल्यूपी यानी सिस्टेमैटिक विदड्रॉल प्लान उन निवेशकों के लिए बेहतरीन विकल्प माना जाता है, जो अपने निवेश से हर महीने निश्चित रकम निकालना चाहते हैं। इसमें निवेशक पहले किसी म्यूचुअल फंड में एकमुश्त राशि निवेश करता है और फिर हर महीने तय रकम निकाल सकता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि बाकी बचा पैसा फंड में निवेशित रहता है और उस पर रिटर्न मिलता रहता है। हालांकि, इसमें बाजार जोखिम जुड़ा होता है, इसलिए निवेश से पहले फंड का प्रदर्शन और जोखिम स्तर समझना जरूरी है।

पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम

जो लोग जोखिम से बचना चाहते हैं, उनके लिए पोस्ट ऑफिस की मंथली इनकम स्कीम काफी भरोसेमंद विकल्प है। यह केंद्र सरकार समर्थित योजना है, इसलिए इसमें जमा राशि सुरक्षित मानी जाती है। इस योजना में निवेश करने पर हर महीने निश्चित ब्याज सीधे खाते में जमा होता है। ग्रामीण और छोटे शहरों में आज भी बड़ी संख्या में लोग इसे सुरक्षित आय का साधन मानते हैं। इसमें एक निश्चित अवधि के लिए निवेश किया जाता है और ब्याज दर सरकार समय-समय पर तय करती है। यह योजना उन लोगों के लिए अधिक फायदेमंद है जो स्थिर और गारंटीड आय चाहते हैं।

डिविडेंड स्टॉक्स

शेयर बाजार में निवेश करने वाले लोगों के बीच डिविडेंड स्टॉक्स तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। डिविडेंड स्टॉक्स वे कंपनियां होती हैं जो अपने मुनाफे का एक हिस्सा नियमित रूप से शेयरधारकों को देती हैं। आमतौर पर मजबूत और स्थिर कंपनियां नियमित डिविडेंड देती हैं। ऐसे में निवेशकों को दोहरा फायदा मिलता है एक तरफ शेयर की कीमत बढ़ने की संभावना रहती है और दूसरी ओर नियमित डिविडेंड आय भी प्राप्त होती है। हालांकि, शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव बना रहता है। लंबी अवधि के निवेशकों के लिए यह अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

कॉर्पोरेट बॉन्ड्स

कॉर्पोरेट बॉन्ड्स उन निवेशकों के लिए अच्छा विकल्प माने जाते हैं जो बैंक एफडी से अधिक रिटर्न चाहते हैं। इसमें निवेशक किसी निजी कंपनी को निश्चित समय के लिए पैसा उधार देता है और बदले में कंपनी तय ब्याज का भुगतान करती है। अच्छी रेटिंग वाली कंपनियों के बॉन्ड अपेक्षाकृत सुरक्षित माने जाते हैं और इनमें बैंक एफडी की तुलना में अधिक ब्याज मिल सकता है। कई कंपनियां मासिक, तिमाही या वार्षिक आधार पर ब्याज भुगतान करती हैं।

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम

सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम खासतौर पर बुजुर्गों के लिए तैयार की गई सुरक्षित निवेश योजना है। इसमें निवेश पर तिमाही आधार पर ब्याज मिलता है और ब्याज दर सामान्य बचत योजनाओं की तुलना में अधिक होती है। इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सरकार की गारंटी रहती है, जिससे निवेश पूरी तरह सुरक्षित माना जाता है। साथ ही आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत टैक्स छूट का लाभ भी मिलता है।

रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स

आरईआईटीएस यानी रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स उन लोगों के लिए बेहतर विकल्प हैं जो बिना प्रॉपर्टी खरीदे रियल एस्टेट से कमाई करना चाहते हैं। इसमें निवेशक बड़े मॉल, ऑफिस स्पेस, कमर्शियल बिल्डिंग और अन्य प्रॉपर्टी प्रोजेक्ट्स में अप्रत्यक्ष रूप से निवेश करते हैं। इन प्रॉपर्टी से मिलने वाला किराया निवेशकों के बीच बांटा जाता है। इसका फायदा यह है कि कम राशि में भी रियल एस्टेट सेक्टर में निवेश संभव हो जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, आरईआईटीएस लंबी अवधि में स्थिर आय और पूंजी वृद्धि दोनों का अवसर प्रदान करते हैं।

मासिक ब्याज एफडी

मासिक ब्याज एफडी उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है जो अपनी जमा पूंजी पर हर महीने निश्चित आय चाहते हैं। इसमें निवेशक बैंक या एनबीएफसी में फिक्स्ड डिपॉजिट कराते हैं और 'मंथली पेआउट' विकल्प चुनते हैं। इससे हर महीने ब्याज सीधे खाते में आता रहता है, जिसे पेंशन की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। वर्तमान समय में कई बैंक और वित्तीय संस्थान आकर्षक ब्याज दरें दे रहे हैं। यह विकल्प कम जोखिम वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त माना जाता है। हालांकि, ब्याज दरें समय-समय पर बदलती रहती हैं, इसलिए निवेश से पहले विभिन्न बैंकों की दरों की तुलना करना जरूरी है। विशेषज्ञों का कहना है कि किसी भी निवेश विकल्प को चुनने से पहले अपनी आय, खर्च, जोखिम क्षमता और वित्तीय लक्ष्य को समझना जरूरी है।

एसआईपी की भीड़ में छुपा निवेश का सबसे 'स्मार्ट प्लान' एफएमपी

सुझाव
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में निवेश की बात हो और एसआईपी का नाम न आए, ऐसा कम ही होता है। हर दूसरा निवेशक एसआईपी के जरिए लंबी अवधि में बड़ा फंड बनाने की बात करता है। लेकिन निवेश की दुनिया केवल शेयर बाजार और इक्विटी फंड्स तक सीमित नहीं है। ऐसे निवेशकों के लिए भी कई विकल्प मौजूद हैं, जो कम जोखिम के साथ स्थिर और अनुमानित रिटर्न चाहते हैं। इन्हीं विकल्पों में एक नाम है एफएमपी यानी फिक्स्ड मैच्योरिटी प्लान?। यह उन लोगों के लिए बेहतर विकल्प माना जाता है जो बैंक एफडी जैसी सुरक्षा चाहते हैं, लेकिन उससे थोड़ा ज्यादा रिटर्न और टैक्स में राहत भी पाना चाहते हैं। यही वजह है कि इसे "म्यूचुअल फंड वाली एफडी " भी कहा जाता है।

क्या होता है एफएमपी ?

एफएमपी यानी फिक्स्ड मैच्योरिटी प्लान एक क्लोज-एंडेड डेट म्यूचुअल फंड होता है। "क्लोज-एंडेड" का मतलब यह है कि इसमें निवेश केवल एक तय समय तक ही किया जा सकता है। जब स्कीम लॉन्च होती है, तभी निवेशक इसमें पैसा लगाते हैं। उसके बाद स्कीम बंद हो जाती है और नए निवेश की अनुमति नहीं रहती।
इसकी सबसे खास बात यह है कि इसकी मैच्योरिटी पहले से तय होती है। यानी फंड हाउस पहले ही बता देता है कि यह योजना 1 साल, 3 साल या 5 साल की होगी। निवेशक को उसी अवधि तक पैसा निवेशित रखना पड़ता है।

कहां निवेश होता है पैसा?

एफएमपी एक डेट फंड है। इसका मतलब है कि इसमें निवेशकों का पैसा शेयर बाजार में नहीं लगाया जाता, बल्कि सरकारी बॉन्ड्स, कॉरपोरेट

बॉन्ड्स, डिबेंचर्स और अन्य फिक्स्ड इनकम इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश किया जाता है। इन साधनों से निश्चित ब्याज मिलता है, इसलिए इसमें जोखिम इक्विटी फंड्स के मुकाबले काफी कम माना जाता है। यही कारण है कि बाजार में भारी गिरावट आने पर भी एफएमपी निवेशकों पर ज्यादा असर नहीं पड़ता।

कैसे काम करता है एफएमपी

एफएमपी का काम करने का तरीका काफी सरल है। मान लीजिए किसी स्कीम की अवधि 3 साल है, तो फंड मैनेजर उन्हीं बॉन्ड्स में निवेश करेगा जिनकी मैच्योरिटी भी लगभग 3 साल बाद हो। इससे फायदा यह होता है कि ब्याज दरों में बीच-बीच में आने वाले उतार-चढ़ाव का असर सीमित हो जाता है। निवेशक को पहले से अंदाजा रहता है कि मैच्योरिटी पर लगभग कितना रिटर्न मिल सकता है।

एफडी से कैसे अलग

अक्सर लोग एफएमपी की तुलना बैंक एफडी से करते हैं। दोनों में ही पैसा एक तय अवधि के लिए निवेश होता है और रिटर्न भी अपेक्षाकृत स्थिर रहता है। लेकिन एफएमपी की सबसे बड़ी ताकत टैक्स बचत मानी जाती है। बैंक एफडी पर मिलने वाले ब्याज पर निवेशक को अपनी टैक्स स्लैब के हिसाब से टैक्स देना पड़ता है। वहीं एफएमपी में लंबी अवधि के निवेश पर इंडेक्सेशन का लाभ मिल सकता है, जिससे टैक्स देनदारी कम हो जाती है। इंडेक्सेशन महंगाई को एडजस्ट करके निवेश की लागत बढ़ा देता है, जिससे टैक्स योग्य लाभ कम दिखता है। इसका फायदा यह होता है कि निवेशक के हाथ में एफडी के मुकाबले ज्यादा नेट रिटर्न बच सकता है।

बाजार की उथल-पुथल में राहत

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में रिटर्न बाजार की चाल पर निर्भर करता है। बाजार तेजी में हो तो मुनाफा अच्छा मिलता है, लेकिन गिरावट आने पर नुकसान भी हो सकता है। इसके विपरीत, एफएमपी में निवेश बॉन्ड्स और फिक्स्ड इनकम इंस्ट्रूमेंट्स में होता है। इसलिए शेयर बाजार में भारी गिरावट आने पर भी इसमें उतार-चढ़ाव सीमित रहता है।

एफएमपी के जोखिम भी समझना जरूरी

एफएमपी को अपेक्षाकृत सुरक्षित माना जाता है, लेकिन इसमें भी कुछ जोखिम मौजूद रहते हैं। सबसे बड़ा जोखिम इसकी कम लिक्विडिटी है। अगर निवेशक को बीच में पैसों की जरूरत पड़ जाए, तो वह एफडी की तरह आसानी से पैसा नहीं निकाल सकता। इसलिए इसमें वही पैसा लगाना चाहिए जिसकी जरूरत मैच्योरिटी से पहले न हो। दूसरा जोखिम क्रेडिट रिस्क का होता है। अगर जिस कंपनी के बॉन्ड में निवेश किया गया है, वह कंपनी भुगतान करने में असफल हो जाए, तो नुकसान हो सकता है।

क्या चुनें?

अगर कोई निवेशक हर महीने छोटी रकम निवेश करना चाहता है और लंबे समय तक जोखिम लेने को तैयार है, तो एसआईपी बेहतर विकल्प हो सकता है। लेकिन जिन लोगों के पास एकमुश्त राशि है जैसे बोनस, रिटायरमेंट फंड या बचत और वे उसे 1 से 3 साल के लिए सुरक्षित रखना चाहते हैं, उनके लिए एफएमपी बेहतर साबित हो सकता है।

समझदारी से लें फैसला

निवेश का सही विकल्प हमेशा व्यक्ति की जरूरत, जोखिम उठाने की क्षमता और निवेश अवधि पर निर्भर करता है। एफएमपी उन निवेशकों के लिए अच्छा विकल्प है जो स्थिरता, अनुमानित रिटर्न और टैक्स में राहत चाहते हैं।एसआईपी और इक्विटी फंड्स जहां लंबी अवधि में अधिक रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं, वहीं एफएमपी पोर्टफोलियो में संतुलन और सुरक्षा देने का काम करता है। इसलिए निवेश करते समय केवल भीड़ का हिस्सा बनने के बजाय जरूरतों के हिसाब से फैसला लेना ज्यादा जरूरी है।

अर्थव्यवस्था मजबूत बनाने वाले विकल्पों में करें निवेश

पीएम मोदी की अपील के बाद बदल रही निवेश की सोच

बचत मंत्र
बिजनेस डेस्क

भारत में सोने को हमेशा सुरक्षित निवेश और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना गया है। शादी-ब्याह से लेकर बचत तक, हर घर में सोना एक अहम हिस्सा रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई मंचों से यह अपील की है कि लोग भौतिक सोने की खरीद कम करें और ऐसे निवेश विकल्प अपनाएं जो देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती दें। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर निवेशक सोने में पैसा फंसाने के बजाय भारतीय कंपनियों, सरकारी योजनाओं और उत्पादक क्षेत्रों में निवेश करते हैं, तो इससे न केवल उन्हें बेहतर रिटर्न मिल सकता है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी फायदा होगा। ऐसे में अगर निवेशक वैकल्पिक साधनों की ओर बढ़ते हैं, तो इससे विदेशी मुद्रा बचाने और घरेलू निवेश को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

इक्विटी म्यूचुअल फंडः छोटी रकम से बड़ी भागीदारी

आज के समय में इक्विटी म्यूचुअल फंड निवेश का सबसे लोकप्रिय विकल्प बन चुके हैं। इसमें निवेशकों का पैसा भारतीय कंपनियों के शेयरों में लगाया जाता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक केवल 500 महीने की एसआईपी से भी शुरुआत कर सकते हैं। लंबे समय में इक्विटी फंड महंगाई को मात देने और बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि जब लोग इक्विटी फंड में निवेश करते हैं, तो उनका पैसा सीधे भारतीय उद्योगों और कारोबार को मजबूत करने में लगता है।

एसजीबी : सोने जैसा भरोसा, बिना स्टोरेज की चिंता

जो लोग सोने में निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड यानी एसजीबी बेहतर विकल्प माना जाता है। यह भारत सरकार द्वारा जारी किया जाता है और इसमें निवेशक को सोने की कीमत बढ़ने का फायदा भी मिलता है। सबसे खास बात यह है कि इसमें भौतिक सोना खरीदने जैसी चोरी, शुद्धता और स्टोरेज की चिंता नहीं रहती। इसके अलावा निवेशक को तय ब्याज भी मिलता है। व

रियल एस्टेटः लंबी अवधि का मजबूत विकल्प

रियल एस्टेट हमेशा से भारतीय निवेशकों की पसंद रहा है। खासतौर पर ऐसे क्षेत्रों में जहां सड़क, मेट्रो, इंडस्ट्रियल कॉरिडोर या नई इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं विकसित हो रही हों, वहां जमीन और संपत्ति के दाम तेजी से बढ़ सकते हैं। हालांकि रियल एस्टेट में निवेश के लिए बड़ी पूंजी की जरूरत होती है, लेकिन लंबी अवधि में यह अच्छा रिटर्न और संपत्ति निर्माण का माध्यम बन सकता है।

पीपीएफ और एनएससी : सुरक्षित निवेश का विकल्प

जो निवेशक जोखिम नहीं लेना चाहते, उनके लिए सरकार समर्थित बचत योजनाएं बेहतर विकल्प मानी जाती हैं।पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट (एनएससी) जैसी योजनाएं सुरक्षित और स्थिर रिटर्न देती हैं। पीपीएफ में लंबी अवधि का टैक्स-फ्री रिटर्न मिलता है, जबकि एनएससी निश्चित ब्याज के साथ सुरक्षित निवेश का विकल्प देता है।

कॉरपोरेट एफडी : बैंक एफडी से ज्यादा रिटर्न

कई निवेशक बैंक एफडीसे बेहतर रिटर्न के लिए कंपनी फिक्स्ड डिपॉजिट यानी कॉरपोरेट एफडी की ओर भी रुख कर रहे हैं। कॉरपोरेट एफडी में ब्याज दरें सामान्य बैंक एफडी से अधिक हो सकती हैं।

गोल्ड ईटीएफ और ईजीआर भी बन रहे विकल्प

विशेषज्ञों का कहना है कि अगर कोई निवेशक सोने में निवेश करना ही चाहता है, तो फिजिकल गोल्ड खरीदने के बजाय गोल्ड ईटीएफ या इलेक्ट्रोनिक गोल्ड रिसिप्ट (ईजीआर) जैसे विकल्प बेहतर हो सकते हैं।इससे गोल्ड इम्पोर्ट पर दबाव कम करने में मदद मिलती है।

संतुलित पोर्टफोलियो जरूरी

वित्तीय विशेषज्ञ हमेशा संतुलित निवेश रणनीति अपनाने की सलाह देते हैं। केवल एक ही साधन में पैसा लगाने के बजाय निवेश को इक्विटी, गोल्ड, डेट और सुरक्षित योजनाओं के बीच बांटना बेहतर माना जाता है। इससे जोखिम कम होता है और अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में पोर्टफोलियो स्थिर बना रहता है।

डायरेक्ट फंड्स चुनें या रेगुलर?

म्यूचुअल फंड में सही तरीके से ही लें निवेश का फैसला

सावधानी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोगों के सामने एक सवाल जरूर आता है—डायरेक्ट फंड चुनें या रेगुलर फंड पहली नजर में दोनों लगभग एक जैसे दिखाई देते हैं। एक ही फंड मैनेजर, एक जैसी निवेश रणनीति और एक जैसा पोर्टफोलियो। लेकिन इन दोनों के बीच का छोटा-सा फर्क लंबे समय में आपकी कमाई पर बड़ा असर डाल सकता है। निवेश शुरू करने से पहले यह समझना जरूरी है कि आखिर डायरेक्ट और रेगुलर फंड में अंतर क्या है और आपके लिए कौन-सा विकल्प ज्यादा बेहतर हो सकता है।

क्या होता है डायरेक्ट और रेगुलर फंड?

डायरेक्ट फंड वह होता है जिसमें निवेशक सीधे म्यूचुअल फंड कंपनी के जरिए निवेश करता है। इसमें कोई एजेंट, डिस्ट्रीब्यूटर या बिचौलिया शामिल नहीं होता। वहीं रेगुलर फंड में निवेश किसी एडवाइजर, बैंक, एजेंट या डिस्ट्रीब्यूटर के माध्यम से किया जाता है। इसके बदले फंड हाउस उन्हें कमीशन देता है, जिसकी लागत निवेशक से वसूली जाती है। यही वजह है कि दोनों फंड्स के रिटर्न में अंतर देखने को मिलता है।

एक्सपेंस रेशियो का खेल समझिए

डायरेक्ट फंड का सबसे बड़ा फायदा इसका कम एक्सपेंस रेशियो होता है। क्योंकि इसमें किसी डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन नहीं दिया जाता, इसलिए निवेशक की लागत कम रहती है। दूसरी तरफ रेगुलर फंड में कमीशन जुड़ने से एक्सपेंस रेशियो थोड़ा ज्यादा हो जाता है। देखने में यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन लंबे समय में यह आपकी कुल कमाई पर बड़ा असर डालता है। उदाहरण के तौर पर, अगर दो फंड एक जैसा रिटर्न दे रहे हों और उनमें केवल 1% लागत का फर्क हो, तो 10-15 साल में यह अंतर लाखों रुपये तक पहुंच सकता है। डायरेक्ट फंड में रिटर्न ज्यादा क्यों दिखता है?
डायरेक्ट फंड में रिटर्न ज्यादा होने का कारण कोई अलग निवेश रणनीति नहीं है। असल वजह यह है कि इसमें फीस कम कटती है। कम लागत का सीधा फायदा निवेशक को मिलता है और लंबी अवधि में कंपाउंडिंग के जरिए यह अंतर और बढ़ जाता है। यही कारण है कि जो निवेशक खुद रिसर्च कर सकते हैं और बाजार को समझते हैं, वे अक्सर डायरेक्ट फंड को प्राथमिकता देते हैं।

फिर लोग रेगुलर फंड क्यों चुनते हैं?

अगर डायरेक्ट फंड सस्ते और ज्यादा रिटर्न देने वाले हैं, तो सवाल उठता है कि लोग रेगुलर फंड क्यों चुनते हैं?
असल में रेगुलर फंड केवल निवेश नहीं, बल्कि गाइडेंस भी देते हैं। एक अच्छा वित्तीय सलाहकार निवेशक की आय, लक्ष्य, जोखिम क्षमता और जरूरतों के हिसाब से सही फंड चुनने में मदद करता है। इसके अलावा बाजार में गिरावट आने पर कई निवेशक घबरा जाते हैं और गलत समय पर पैसा निकाल लेते हैं। ऐसे समय में एडवाइजर निवेशक को शांत रखने और सही रणनीति पर टिके रहने में मदद करता है। यानी रेगुलर फंड की अतिरिक्त लागत केवल कमीशन नहीं, बल्कि सलाह और सपोर्ट की फीस भी होती है।

आपके लिए कौन-सा विकल्प सही?

अगर आप निवेश की बेसिक समझ रखते हैं, खुद रिसर्च कर सकते हैं और बाजार के उतार-चढ़ाव में भावनात्मक फैसले नहीं लेते, तो डायरेक्ट फंड आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकते हैं। लेकिन अगर आप नए निवेशक हैं, फंड चुनने में कन्फ्यूज रहते हैं या बाजार गिरने पर घबरा जाते हैं, तो रेगुलर फंड ज्यादा सुरक्षित विकल्प साबित हो सकते हैं। कई बार गलत फैसले जैसे बाजार गिरते ही निवेश रोक देना या बार-बार फंड बदलना निवेशक को उस फीस से कहीं ज्यादा नुकसान पहुंचा देते हैं जो वह रेगुलर फंड में देता है। म्यूचुअल फंड में सफलता केवल सही फंड चुनने से नहीं मिलती, बल्कि सही व्यवहार भी उतना ही जरूरी होता है। हाल में सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाले फंड के पीछे भागना। बाजार गिरते ही निवेश रोक देना। बार-बार पोर्टफोलियो बदलना। छोटी अवधि में बड़े रिटर्न की उम्मीद करना। ये गलतियां निवेश की पूरी रणनीति खराब कर सकती हैं।

लंबी अवधि में अनुशासन ही असली फायदा

डायरेक्ट फंड हो या रेगुलर, दोनों में सबसे ज्यादा जरूरी है अनुशासन और धैर्य। अगर निवेशक लंबे समय तक लगातार निवेश बनाए रखता है, तो कंपाउंडिंग का फायदा धीरे-धीरे बड़ा फंड तैयार करता है। इसलिए निवेश का फैसला केवल कम फीस या ज्यादा रिटर्न देखकर नहीं, बल्कि अपनी समझ, अनुभव और व्यवहार को ध्यान में रखकर लेना चाहिए।

समझदारी से चुनें निवेश का रास्ता

डायरेक्ट और रेगुलर फंड दोनों के अपने फायदे हैं। डायरेक्ट फंड कम लागत और ज्यादा संभावित रिटर्न देते हैं, जबकि रेगुलर फंड सलाह और निवेश अनुशासन बनाए रखने में मदद करते हैं। आखिर में सही विकल्प वही है जो आपकी जरूरत, निवेश ज्ञान और मानसिक आराम के हिसाब से फिट बैठे। क्योंकि सफल निवेश केवल सही फंड चुनने से नहीं, बल्कि लंबे समय तक सही रणनीति पर टिके रहने से बनता है।

सही रणनीति, अनुशासन और धैर्य के साथ करें निवेश

एसआईपी के बेस्ट टिप्स, लंबे समय में बना देंगे बड़ा फंड

- समय पर शुरू की गई एसआईपी देती है बड़ा फायदा
- लंबी अवधि का निवेश ही दिलाता है असली रिटर्न

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में हर व्यक्ति चाहता है कि उसका भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित हो। बेहतर घर, बच्चों की पढ़ाई, रिटायरमेंट के बाद आरामदायक जीवन और अचानक आने वाली जरूरतों के लिए बड़ा फंड तैयार करना अब लोगों की प्राथमिकता बन चुका है, लेकिन जब निवेश की बात आती है तो अधिकतर लोग शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव से डर जाते हैं। ऐसे में म्यूचुअल फंड की एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान एक आसान और भरोसेमंद विकल्प बनकर सामने आती है। एसआईपी केवल हर महीने कुछ रुपये जमा करने का तरीका नहीं है, बल्कि यह एक अनुशासित निवेश रणनीति है। छोटी रकम से शुरू होकर यह लंबे समय में बड़ा फंड तैयार करने की क्षमता रखती है। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि सही प्लानिंग और धैर्य के साथ एसआईपी करोड़ों रुपये का कॉर्पस तैयार कर सकती है।

अनुशासन जरूरी

कई लोग बाजार गिरने पर घबराकर अपनी एसआईपी बंद कर देते हैं, जबकि यही सबसे बड़ी गलती होती है। एसआईपी का असली फायदा तभी मिलता है जब निवेशक लगातार निवेश करता रहे। बाजार में गिरावट आने पर कम कीमत पर ज्यादा यूनिट्स खरीदने का मौका मिलता है। इसे रुपी कॉस्ट एवरेजिंग (आरसीए)कहा जाता है। लंबे समय में यही रणनीति औसत लागत को कम करती है और बेहतर रिटर्न देने में मदद करती है। इसलिए बाजार की हलचल देखकर निवेश रोकने के बजाय अनुशासन बनाए रखना जरूरी है।

लंबी अवधि का नजरिया रखें

एसआईपी उन लोगों के लिए नहीं है जो एक-दो साल में पैसा दोगुना करना चाहते हैं। म्यूचुअल फंड में असली संपत्ति लंबे समय में बनती है। विशेषज्ञ कम से कम 5 से 10 साल का नजरिया रखने की सलाह देते हैं।

शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार सामान्य लग सकती है, लेकिन जैसे-जैसे समय बढ़ता है, कंपाउंडिंग का असर तेजी से दिखाई देने लगता है। कई निवेशकों का अनुभव है कि 10-15 साल तक नियमित एसआईपी करने पर बड़ा फंड तैयार किया जा सकता है।

लक्ष्य तय करके करें निवेश

बिना लक्ष्य के निवेश करना अक्सर भ्रम पैदा करता है। इसलिए एसआईपी शुरू करने से पहले यह तय करना जरूरी है कि निवेश किस उद्देश्य के लिए किया जा रहा है। जैसे घर खरीदना, बच्चों की उच्च शिक्षा, शादी, रिटायरमेंट या इमरजेंसी फंड। जब निवेश किसी खास लक्ष्य से जुड़ा होता है तो बाजार की गिरावट में भी निवेशक भावनात्मक रूप से मजबूत बना रहता है।

जोखिम क्षमता को समझें

हर निवेशक की आर्थिक स्थिति और जोखिम लेने की क्षमता अलग होती है। इसलिए दूसरों को देखकर निवेश करना नुकसानदायक हो सकता है। यदि कोई निवेशक ज्यादा जोखिम नहीं लेना चाहता तो उसे लार्ज कैप या इंडेक्स फंड से शुरुआत करनी चाहिए। वहीं, लंबे समय तक निवेश करने वाले और ज्यादा जोखिम लेने वाले निवेशक मिड कैप या स्मॉल कैप फंड का विकल्प चुन सकते हैं। सही फंड का चयन उम्र, आय और वित्तीय जरूरतों को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

ज्यादा रिटर्न देख फंड न चुनें

कई लोग पिछले एक साल का शानदार रिटर्न देखकर किसी फंड में निवेश कर देते हैं, जबकि यह तरीका सही नहीं माना जाता। फंड चुनते समय उसके पिछले 5 से 10 साल के प्रदर्शन को देखना जरूरी है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार गिरने पर फंड का प्रदर्शन कैसा रहा, फंड मैनेजर का अनुभव कितना है और फंड लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा है या नहीं। जैसे-जैसे आय बढ़ती है, निवेश की रकम भी बढ़ानी चाहिए। इसे स्टेपअप एसआईपी कहा जाता है। यदि कोई व्यक्ति हर साल अपनी एसआईपी में 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी करता है तो लंबे समय में उसका फंड कई गुना तेजी से बढ़ सकता है। उदाहरण के तौर पर 5 हजार रुपये मासिक एसआईपी शुरू करने वाला निवेशक यदि हर साल इसमें थोड़ी वृद्धि करता रहे, तो भविष्य में करोड़ों रुपये का कॉर्पस तैयार करना आसान हो सकता है।

बाजार की गिरावट को समझें

जब बाजार में भारी गिरावट आती है तो अधिकतर निवेशक डर जाते हैं, लेकिन अनुभवी निवेशक इसे अवसर मानते हैं। गिरावट के दौरान कम कीमत पर खरीदी गई यूनिट्स भविष्य में ज्यादा रिटर्न देने की संभावना रखती हैं। इसीलिए बाजार में उतार-चढ़ाव को लेकर घबराने के बजाय निवेशकों को अपनी रणनीति पर टिके रहना चाहिए। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत यही है कि यह बाजार के अलग-अलग स्तरों पर निवेश जारी रखती है।

धैर्य ही सबसे बड़ी पूंजी

शेयर बाजार में सफलता केवल ज्ञान से नहीं, बल्कि धैर्य से भी मिलती है। बाजार में उतार-चढ़ाव सामान्य बात है। जो निवेशक हर गिरावट में घबराकर फैसले बदलता है, उसे नुकसान उठाना पड़ सकता है। वहीं, जो निवेशक लंबे समय तक अपनी रणनीति पर कायम रहता है, वही अंत में बड़ा लाभ कमाने में सफल होता है। एसआईपी में धैर्य रखने वाले निवेशकों को ही कंपाउंडिंग का असली फायदा मिलता है।

खबर संक्षेप

एकजुटता ही है सबसे बड़ा हथियार: महता

बवानीखेड़ा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ईंधन बचाओ आह्वान को जन-आंदोलन बनाने के संकल्प के साथ वरिष्ठ भाजपा नेता जगदंबा महता ने कार्यकर्ताओं और आम जनता से विशेष अपील की है। उन्होंने कहा कि ईंधन की बचत राष्ट्र निर्माण में दिया गया एक बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार और नेतृत्व इस बात को लेकर गंभीर है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। आज समय की नजाकत को समझना बेहद जरूरी है। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता और नागरिक जितना संभव हो सके, ईंधन की बचत करें। ऊर्जा संरक्षण ही वह जरिया है जिससे हम वैश्विक ऊर्जा संकट और पर्यावरणीय चुनौतियों से पूरी ताकत व मजबूती से लड़ सकते हैं। भाजपा नेता ने कहा कि संसाधनों की कमी जैसी वैश्विक समस्याओं और विपदाओं से निपटने के लिए देशवासियों की एकजुटता ही सबसे बड़ा हथियार है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे घर-घर जाकर लोगों को इसके फायदों के बारे में बताएं।

एक पेड़ मां के नाम अभियान में सहयोग की अपील कर रहे फौगाट

बाढ़ड़ा। बाढ़ड़ा खंड के सहायक समन्वयक सुंदरपाल फौगाट द्वारा लगातार क्षेत्र के मौजिज लोगों से मुलाकात की जा रही है। इन शिष्टाचार भेंटों के दौरान सभी को एक पेड़ मां के नाम अभियान में अधिक से अधिक सहभागिता के लिए आह्वान कर रहे है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सबको आगे आने व यथासंभव सहयोग की अपील कर रहे है। इसी कड़ी में उन्होंने बाढ़ड़ा विधायक उमेद पातुवास से मुलाकात की। उन्होंने विधायक को पौधा भेंट करते हुए उनसे गुजारिश कि वो इस अभियान में अधिक से अधिक लोगों को जुड़ने के लिए प्रेरित करें। विधायक ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम एक प्रयास है, जो हमारी मातृभूमि और प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान एवं समर्पण को दर्शाता है। अभियान का उद्देश्य मां के नाम पर पेड़ लगाना और स्थायी स्मृति बनाना है, जो न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा, बल्कि एक हरे और अधिक समृद्ध भविष्य के निर्माण में भी योगदान देगा। सुंदरपाल फौगाट ने लोगों को पर्यावरण संरक्षण और अधिक से अधिक पौधे लगाने की शपथ दिलाई।

घुसकानी के स्कूल की तर्ज पर तिगड़ाना में होगी क्लासें एमसीक्यू के संग "पाठ पढ़ो, लिखो,याद करो, सुनाओ और इनाम पाओ" की मुहिम शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

गांव घुसकानी के स्कूल में शुरू हुई बदलाव की पाठशाला का रंग अब तिगड़ाना कन्या स्कूल पर भी चढ़ने लगा। इसी क्रम में तिगड़ाना कन्या स्कूल प्रशासन ने घुसकानी स्कूल से सीख लेते हुए बदलाव की पाठशाला (पींकू) शुरू की है। तिगड़ाना स्कूल में हर सप्ताह शनिवार को 12 वीं कक्षा के विद्यार्थियों को सब्जेक्ट से संबंधित एमएसक्यू की कोचिंग क्लासें शुरू होगी। स्कूल में तैनात शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए सब्जेक्ट से संबंधित एमएसक्यू ही पढ़ाए जाएंगे। अगर स्कूल प्रशासन इस अभियान में सफल हो जाता है तो अगले साल से 11 वीं कक्षा के बच्चों की भी इसी तरह की क्लासें लगाई जाएंगी। क्योंकि अगर बच्चों को इस तरह की कोचिंग मिल जाती है तो वे कोई भी प्रतियोगिता परीक्षा आसानी से पास कर सकते हैं।

बदलाव की पाठशाला शरू करने वाले पींकू को तिगड़ाना स्कूल में किया सम्मानित

ममता बलौदा को बनाया गया है अभियान की नोडल अधिकारी

स्कूल में शुरू किए गए बदलाव की पाठशाला अभियान को मुकाम तक पहुंचाने के लिए स्कूल प्राचार्य सज्जन तंवर ने शिक्षिका ममता बलौदा को नोडल अधिकारी बनाया है। उनकी देखरेख में सप्ताह के हर शनिवार को 12 वीं क्लास की छात्राओं सब्जेक्ट से संबंधित एमएसक्यू की कोचिंग क्लासें लगवाई जाएगी। इन क्लासों में संबंधित सब्जेक्ट के टीचर द्वारा तैयार किए गए एमएसक्यू ही पढाए जाएंगे। प्रत्येक सब्जेक्ट के टीचर के जिम्मे 400-400 एमएसक्यू तैयार करवाए जा रहे है। ताकि 12 वीं के विद्यार्थियों की प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी भी होगी और विषय के डाऊट भी दूर हो जाएंगे। अगर कोई बच्चा शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए एमएसक्यू एक बार याद कर लेगा तो उसको सब्जेक्ट के विषय की सारी जानकारी मिल जाएगी।

बच्चे स्वयं पाठ पढ़कर तैयार करते हैं प्रश्न

बताते हैं गांव घुसकानी के स्कूल में तैनात पीटीआई विनोद पींकू ने अपने स्कूल में बदलाव की पाठशाला शुरू की थी। उक्त पाठशाला में बच्चे अपने आप सब्जेक्ट का पाठ पढ़ते और उसमें से अपने आप ही छोटे प्रश्न व उत्तर तैयार करते है। महीने के अंतिम दिनों में बच्चों द्वारा तैयार किए गए प्रश्नों के आधार पर उनकी प्रतियोगिता करवाई जाती है। जो बच्चा ज्यादा अंक व ज्यादा प्रश्नों के जवाब देता है। उसको इनाम दिया जाता है। इस तरह से घुसकानी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की पढ़ाई में अच्छी रुचि बन गई।

मुहिम बहुत ही प्रेरणादायक एवं उपयोगी: प्राचार्य

वीर शहीद वीर सिंह राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तिगड़ाना में शनिवार को शारीरिक शिक्षा शिक्षक विनोद कुमार पिंकू को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रशंसा पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य सज्जन तंवर ने कहा कि शारीरिक शिक्षक विनोद कुमार पिंकू पूरी मेहनत, ईमानदारी एवं लगन के साथ अपना कार्य कर रहे हैं। प्राचार्य ने कहा कि विनोद पिंकू द्वारा चलाई जा रही बदलाव की पाठशाला में " पाठ पढ़ो, लिखो,याद करो, सुनाओ और इनाम पाओ" मुहिम बहुत ही प्रेरणादायक एवं उपयोगी है। इस प्रकार की योजना को विद्यालय में बारहवीं कक्षा के शुरू किया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों के सीखने के स्तर एवं परीक्षा परिणामों में सकारात्मक सुधार देखने को मिलेगा। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ पंकज शर्मा,सरपंच प्रतिनिधि थानेदार राजेंद्र सिंह दहिया, ब्लॉक समिति अध्यक्ष सीताराम शर्मा, समाजसेवी धीरज हवलदार, पंच सुरेंद्र सिंह, मास्टर सतेंद्र शर्मा शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने शारीरिक शिक्षक विनोद कुमार पिंकू के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर अनिल हलवासिया, ममता बलौदा, राजवंती प्रवक्ता शारीरिक शिक्षा, अंजू रानी, विमला गणित प्रवक्ता, ममता रानी,मेघा रानी, नीरज, सुदेश देवी, अनीता, नीनू, सुशीला डीपीई, सतीश कुमार, कृष्णा देवी आदि मौजूद थे।

बिजली कट को लेकर बिफरे बलियाली के ग्रामीण

बिजलीघर का किया घेराव, जेई के आश्वासन के बाद हुए शांत

दो कनिष्ठ अभियंताओं ने ग्रामीणों की मांगों को सुना और जल्द ही समाधान करवाने का आश्वासन दिया

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बिजली के बार बार कट लगने व समस्याओं को लेकर गांव बलियाली की महिला व पुरुषों ने बिजली घर का घेराव किया। इस दौरान प्रदर्शनकारी महिलाओं ने नारेबाजी की। बाद में मौके पर दो कनिष्ठ अभियंताओं ने ग्रामीणों की मांगों को सुना और जल्द ही समाधान करवाने का आश्वासन दिया। उसके बाद ही महिलाएं धरने से उठने को राजी हुई। प्रदर्शनकारी महिलाओं ने चेतावनी दी कि अगर उनकी मांग जल्द पूरी नहीं की गई तो वे 20 दिन के बाद फिर से आंदोलन की राह पकड़ने पर मजबूर होंगी।

सुबह करीब दस बजे अनेक महिला व पुरुष एकत्रित होकर बिजली घर के मुख्य गेट के बाहर बैठ गए। जिसके चलते कर्मचारियों का आना व जाना पूरी तरह से बंद हो गया। कर्मचारियों ने इस बारे में आला अधिकारियों को सूचना दी। सूचना मिलते ही कनिष्ठ अभियंता अनिल तथा अमित मौके पर पहुंचे। इस दौरान ग्रामीणों ने उनको मांगपत्र सौंपा। सौंपे गए मांगपत्र में ग्रामीणों ने बताया कि उनके गांव में कम से कम तीन लाइनमैन तैनात किए जाए। जिनमें से दो लाइन मैन गांव के ही होने चाहिए। चूंकि देर सवेर बिजली में फाल्ट होते रहते है। अगर फाल्ट हो जाए तो गांव का लाइन मैन होने की वजह से तत्काल बिजली की सप्लाई दुरुस्त करके चालू की जा सकती है। इसी तरह गांव के जलघरों की बिजली दूसरे बिजली घर की बजाए गांव के ही पॉवर हाऊस से जोड़ी जाए। इस दौरान ग्रामीणों ने कहा कि सोमवार तक लाइनमैन की नियुक्ति की जाए। इनके अलावा अन्य सभी मांगों को 20 दिनों के भीतर हल किया जाना चाहिए। अगर इस दौरान उनकी समस्याओं को हल नहीं किया जाता तो वे फिर से आंदोलन की राह पकडने पर मजबूर होगें।

बवानीखेड़ा। मांगों को लेकर कार्यालय के बाहर बैठे प्रदर्शनकारी।

ट्रिपिंग की समस्या खत्म हो: सरपंच

सरपंच सचिन सरदाना ने कहा कि गांव के लोगों को पर्याप्त बिजली आपूर्ति मिलनी चाहिए। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से मांग करते हुए कहा कि बिजली व्यवस्था में तुरंत सुधार किया जाए ट्रिपिंग की समस्या खत्म की जाए और गांव को तय समय अनुसार बिजली उपलब्ध करवाई जाए। तीन लाइनमैंनों में दो गांव के होने चाहिए एक चाहे आसपास का हो। ट्री कटिंग होनी चाहिएए ट्रांसफार्मर के हैंडए वायर आदि ठीक होनी चाहिएए डैमेंज तारों को बदला जाना चाहिए, गांव को 6 जोन में बांटा जाए। सभी फाल्ट ठीक किए जाएंए जलघर में दांग की बजाए बलियाली से बिजली दी जाए।

पृथ्वीराज चौहान के नाम चौक का नामकरण

- महापुरुषों के नाम से बने चौक भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणापुंज : ठाकुर विक्रम

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

छोटी काशी के रूप में विख्यात भिवानी के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक ताने-बाने में शनिवार को नया एवं गौरवमयी अध्याय जुड़ गया। गांव पालुवास के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के समीप नवनिर्मित चौराहे का नामकरण देश के महान हिंदू सम्राट वीर शिरोमणि पृथ्वीराज सिंह चौहान के नाम पर किया गया।

पृथ्वीराज सिंह चौहान चौक के इस गरिमामयी नामकरण समारोह में क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों, जनप्रतिनिधियों और देशभक्तों ने सहभागिता की और पूरा माहौल राष्ट्रभक्ति के रंग में सराबोर नजर आया। कार्यक्रम में मुख्यतिथि के तौर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता ठाकुर विक्रम सिंह ने शिरकत की, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में भाजपा के जिला महामंत्री रमेश पचेरवाल उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्कूली बच्चों एवं ग्रामीणों ने मुख्यतिथि व अन्य गणमान्य लोगों का जोरदार स्वागत किया। ठाकुर विक्रमसिंह ने कहा कि महापुरुष किसी एक जाति, वर्ग या कालखंड के नहीं होते, वे संपूर्ण राष्ट्र की धरोहर होते हैं। इस अवसर पर राजकुमार चौहान, संजय गांधी, पिंकी, बृजपाल, सरपंच प्रतिनिधि रणबीर आदि मौजूद रहे।

भिवानी। गांव पालुवास में वीर शिरोमणि सम्राट पृथ्वीराज चौहान चौक का उद्घाटन करते ठाकुर विक्रम सिंह व अन्य। फोटो: हरिभूमि

जुई में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का दिया संदेश

भिवानी। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का संदेश लेकर मोबाइल वैन शनिवार को गांव जूई के राजकीय प्राथमिक पाठशाला में पंहुची। इस मौके पर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ को लेकर जागरूक किया गया। स्कूल हेडमास्टर अमित कुमार व महिला एवं बाल विकास विभाग से सुपरवाइजर आईना ने कहा कि आमजन अपने दायित्व को समझते हुए भ्रूण हत्या नहीं होने दें।

लड़कियां आज किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। भ्रूण हत्या महापाप व अपराध है, अगर कहीं कोई घटना दिखे तो तुरंत प्रशासन को सूचित करें। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा और दोषियों पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

पुल-पार्टी में लिटिल हार्टस के नन्हे-मुन्हों ने की खूब मस्ती

भिवानी। पुल पार्टी में मस्ती करते नन्हें मुन्हें विद्यार्थी।

भिवानी। सेक्टर-13 स्थित लिटिल हार्टस इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को प्री-प्राइमरी ग्रुप की पूल-पार्टी हुई। विद्यालय के महासचिव संजय गोयल, एमडी पवन गोयल व भावना गोयल ने बताया कि इस मौके पर प्री-प्राइमरी ग्रुप की विभिन्न गतिविधियां करवाई गई, जिनमें से प्ले ग्रुप के बच्चों की पूल-पार्टी मुख्य रही। पुल पार्टी के अन्तर्गत बच्चों ने बढ़-चढ़कर बड़े उत्साह के साथ हिस्सा लिया व पूरे हर्षोल्लास के साथ नृत्य किया। विद्यालय के निदेशक रामानन्द सिंघल, ऐश्वर्या सिंघल, राहुल गोयल, विनय गोयल, निश्चल गोयल व साक्षी गोयल ने बच्चों की प्रतिभा व उत्साह की सराहना व उनका उत्साहवर्धन किया।

कैडेट्स ने सीखे आग पर काबू पाने के गुर

- सीमा सुरक्षा को चाक-चौबंद रखने के लिए दिन-रात की पेट्रोलिंग गश्त का दिया व्यावहारिक ज्ञान

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। प्रशिक्षण शिविर में कैडेट्स को आग पर काबू पाने के गुर सिखाते फायर अधिकारी व एनसीसी अधिकारी। फोटो: हरिभूमि

11 हरियाणा बटालियन एनसीसी भिवानी के तत्वावधान में कैडेट्स के लिए 10 दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में आयोजन किया। सत्र का मुख्य उद्देश्य कैडेट्स को आपदा प्रबंधन, राष्ट्रीय सुरक्षा और कठिन परिस्थितियों में त्वरित कार्रवाई के लिए तैयार करना था।

शिविर में कैंप एडजुटेंट फर्स्ट ऑफिसर राजेश कुमार ने कैडेट्स को भारत की सीमाओं और विशेषकर तटीय क्षेत्रों की संवेदनशीलता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कैडेट्स को बताया कि दलदली जमीन, समुद्री लहरें, चक्रवात व अत्यधिक नमी वाले तटीय क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था संभालना कितना चुनौतीपूर्ण होता है। पेट्रोलिंग के तरीके बताते हुए नायब सूबेदार लोकेश कुमार ने कहा कि सीमा सुरक्षा को चाक-चौबंद रखने के लिए दिन और रात की पेट्रोलिंग (गश्त), रेकी और संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने की रणनीति कड़ियों का व्यावहारिक ज्ञान दिया। भिवानी फायर ब्रिगेड की टीम ने आग जैसी अचानक आने वाली आपदा से निपटने के लिए कैडेट्स को 'फायर कंट्रोल' के बुनियादी सिद्धांतों से परिचित करवाया। सत्र के दौरान विभिन्न प्रकार के अग्निशामक यंत्र ड्राई केमिकल पाउडर व फोम-बेस्ड एक्सटिंग्विशर का लाइव प्रदर्शन कर दिखाया।

यूजीसी गाइड लाइन उल्लंघन पर भर्ती रद्द होने का किया स्वागत

बाढ़ड़ा। मार्क्सवादी भिवानी-चरखी दादरी जिला कमेटी के सदस्य कामरेड सुमेर सिंह ने हरियाणा पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा वर्ष 2024 में कॉलेज कैडर अंग्रेजी विषय के सहायक प्रोफेसरों की भर्ती में यूजीसी गाइड लाइन के उल्लंघन को लेकर पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट द्वारा भर्ती प्रक्रिया रद्द किए जाने के फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि फैसला उन हजारों अभ्यर्थियों के संघर्ष और न्याय की जीत है, जिन्होंने भर्ती प्रक्रिया में अनियमितताओं के खिलाफ आवाज उठाई। सुमेर सिंह ने मांग की कि यूजीसी नियमों की अनदेखी की अन्य सभी भर्तियों की भी निष्पक्ष जांच करवाई जाए।

नांदेड़ साहिब के लिए रवाना हुए श्रद्धालु

- विधायक घनश्याम सर्राफ, विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि, भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक और एसडीएम महेश कुमार ने हरी झंडी दिखाकर किया ट्रेन को रवाना

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के अंतर्गत शुक्रवार शाम सात बजे नांदेड़ साहेब के लिए रवाना हुई। जिला भिवानी से 29 श्रद्धालु उमंग और श्रद्धा भाव से ट्रेन में सवार हुए। भिवानी के विधायक घनश्याम सर्राफ, बवानीखेड़ा के विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि, भाजपा जिलाध्यक्ष विरेंद्र कौशिक और एसडीएम महेश कुमार ने ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस विशेष ट्रेन को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सिरसा से शुक्रवार शाम करीब 5.15 बजे रवाना किया था, जो कि सायं करीब 8:10 बजे भिवानी रेलवे स्टेशन पर पहुंची थी, यहां इसे करीब 8.15 बजे रवाना किया गया।श्रद्धालुओं को रवाना करते हुए विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि प्रदेश सरकार लोगों की आस्था का पूरा ख्याल रख रही है। इसी के चलते मुख्यमंत्री तीर्थ यात्री योजना चलाई जा रही है। तीर्थ यात्रा योजना के तहत निःशुल्क यात्रा के लिए 60 वर्ष से अधिक के वरिष्ठ नागरिक को चुना गया है।

भिवानी। नांदेड़ साहिब के लिए रेलगाड़ी रवाना करने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित विधायक व अन्य। फोटो: हरिभूमि

हर वर्ग खुश

बवानीखेड़ा के विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने कहा कि पांच मई को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कुरुक्षेत्र से नांदेड़ साहेब के लिए पहली ट्रेन को रवाना किया था। यह दूसरी ट्रेन है, जो नांदेड़ साहिब जा रही है। उन्होंने कहा कि तीर्थ यात्रा पा जा रहे लोग भाग्यशाली हैं। उन्होंने कहा कि तीर्थ यात्रियों का खर्च सरकार वहन कर रही है। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने कहा कि भाजपा सरकार से हर वर्ग खुश है। सरकार हर वर्ग के लोगों के लिए नीतियाँ व योजनाएं बना रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार न केवल लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठा रही है बल्कि हमारी प्राचीन संस्कृति को जीवंत कर रही है।

शनि जयंती शनिवार एवं अमावस्या को होना महासंयोग एवं अत्यंत फलदायी: तंवर

भिवानी। गांव पालुवास स्थित भगवान शनि देव मंदिर में ज्येष्ठ मास की अमावस्या पर शनिवार को शनि जयंती पर्व बेहद धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस विशेष दिन पर मंदिर परिसर में भव्य हवन-यज्ञ और विशाल भंडारे का आयोजन किया, जिसमें पालुवास सहित आसपास के अनेक गांवों से आए सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया और भगवान शनि देव के दर्शन कर सुख-समृद्धि की कामना की विद्वान आचार्यों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन-यज्ञ संपन्न करवाया। इसके उपरांत भगवान शनि देव को भोग लगाकर भंडारे प्रसाद वितरण का आयोजन किया। श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध होकर पूरी सुव्यवस्था के साथ बाबा का आशीर्वाद लिया और भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर समाजसेवी एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता नरेश तंवर जीएम ने कहा कि ज्येष्ठ माह की अमावस्या का दिन भारतीय सनातन संस्कृति में बेहद अनूठा एवं पवित्र माना गया है।

समाज की अटूट आस्था एवं एकजुटता का प्रतीक है धार्मिक आयोजन : महता

हवन में यजमानों और श्रद्धालुओं ने आहुति डालकर सुख समृद्धि के लिए कामना की

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

तेलीवाड़ा स्थित प्राचीन श्रीशिव मन्दिर में शनिवार को शनि जन्मोत्सव पर हवन यज्ञ व भंडारे का आयोजन हुआ। जय शिव सेवा समिति तेलीवाड़ा द्वारा कार्यक्रम में अलसुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। मंदिर परिसर भगवान शनि देव और देवाधिदेव महादेव के जयकारों से गुंजायमान रहा। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह विधि-विधान से मंत्रोच्चारण के बीच सामूहिक हवन यज्ञ और शनि वन्दना के साथ हुई। मुख्य यजमानों एवं श्रद्धालुओं ने आहुति डालकर क्षेत्र की सुख, समृद्धि एवं शांति की कामना की। वहीं शनिदेव की विशेष आरती की, जिसमें भारी संख्या में महिला व पुरुष श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। सभी भक्तों के बीच विशेष प्रसाद का वितरण किया। कतारों में खड़े श्रद्धालुओं ने पूरी अनुशासित व्यवस्था के साथ भगवान का आशीर्वाद और प्रसाद ग्रहण किया। समिति के प्रधान देवराज महता ने कहा कि ये आयोजन समाज की अटूट आस्था का प्रतीक है।

भिवानी। श्रीशनिदेव जन्मोत्सव पर प्रसाद वितरित करते जय शिव सेवा समिति तेलीवाड़ा के सदस्य। फोटो: हरिभूमि

शनिदेव कर्मफल दाता

भिवानी। आदर्श गांव सुई स्थित श्रीसंकट मोचन श्रीबालाजी धाम में शनिवार को ज्येष्ठ अमावस्या पर शनि जन्मोत्सव एवं वट सावित्री व्रत बेहद श्रद्धा, उल्लास और सेवाभाव से मनाया। इस दोहरे शुभ संयोग पर धाम परिसर में विशेष पूजा-अर्चना, यज्ञ और सामाजिक सरोकार के अनेक कार्यों का आयोजन किया,जिसमें ग्रामीणों सहित दूर-दराज से आए श्रद्धालुओं ने हिस्सा लेकर पुण्य कमाया। संस्थान के अध्यक्ष ज्योतिषाचार्य डॉ. उमेद शर्मा ने कहा कि आज नवग्रहों में न्यायाधीश की उपाधि प्राप्त भगवान श्रीशनिदेव का जन्मोत्सव है। शनिदेव कर्मफल दाता हैं, जो व्यक्ति पुण्य कार्य करता है और गरीबों का भला करता है, शनि देव हमेशा उसका साथ देते हैं। डॉ. उमेद ने बताया कि जो लोग पाप कर्म, बुरा आचरण और अन्याय करते हैं, उन्हें शनि देव के कोप एवं दंड का भागी बनना पड़ता है। जब व्यक्ति पर शनि की ढैया या साढ़ेसाती आती है, तो वह अत्यंत पीड़ादायक हो सकती है।

ऑटो मार्केट में श्रद्धापूर्वक मनाया श्रीशनि जन्मोत्सव

भिवानी। ऑटो मार्केट स्थित प्राचीन श्रीविश्वकर्मा मंदिर में शनिवार को श्रीशनि जन्मोत्सव पर भव्य धार्मिक कार्यक्रम हुआ। ऑटो मार्केट के पूर्व प्रधान जितेंद्र सिंह के नेतृत्व में कार्यक्रम में भगवान शनिदेव की प्रतिमा की विधि-विधान से स्थापना की और भंडारे का आयोजन किया। इस धार्मिक उत्सव में ऑटो मार्केट के व्यापारियों, मैकेनिकों सहित सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। विद्वान पंडितों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण और शुद्धिकरण के साथ भगवान शनिदेव की भव्य प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा की गई। इस अवसर पर भक्तों ने सामूहिक रूप से शनि चालीसा का पाठ किया।

सूचना

मैं, सुमेर सिंह पुत्र धर्मपाल निवासी गांव ढाणा जोगी, तहसील लोहारू, जिला भिवानी, हरियाणा बयान करता हूं कि मेरी पुत्री ज्योति मेरे कहने-सुनने से बाहर है। इसलिये मैं इसको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। इससे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

ताला तोड़कर चोरी के दो आरोपियों को किया गिरफ्तार

भिवानी। सीआईए स्टाफ-2 भिवानी ने सेवा नगर क्षेत्र में मकान का ताला तोड़कर चोरी के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार सेवा नगर की महिला ने थाना शहर भिवानी में शिकायत दर्ज करवाई थी कि पांच मार्च को वह परिवार सहित खाटू श्याम मंदिर दर्शन के लिए गई थी। इसी दौरान अज्ञात व्यक्तियों ने मकान का ताला तोड़कर घर में प्रवेश किया और वहां से नकदी, सोने-चांदी के आभूषण तथा एक स्कूटी चोरी कर ले गए। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज किया था। मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए सीआईए स्टाफ-2 भिवानी ने दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान राकेश पुत्र प्रकाश निवासी गोकलगढ़ रेवाड़ी व मनोज पुत्र पीतांबर निवासी गोकलगढ़ रेवाड़ी के रूप में हुई है।

हत्या की कोशिश के आरोपी को 10 वर्ष की कैद

भिवानी। एडिशनल सेशन जज सुरुचि अटरेजा सिंह की अदालत ने हत्या के प्रयास के मामले में आरोपी को दोषी करार देते हुए 10 वर्ष कैद एवं जुर्माने की सजा सुनाई है। जुर्माना की राशि अदा न करने पर अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार गांव लेघा भानान निवासी सत्येंद्र ने थाना तोशाम पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई थी। बताया था कि 14 अप्रैल 2021 की शाम वह खेत से मोटरसाइकिल पर घर लौट रहा था। रास्ते में आरोपी सुनील पुत्र धर्म सिंह ने ट्रैक्टर लगाकर रास्ता रोक लिया, जिससे वह मोटरसाइकिल सहित नीचे खेत में गिर गया। इसके बाद आरोपी ने शिकायतकर्ता को जान से मारने की नीयत से उसके ऊपर ट्रैक्टर चढ़ा दिया। परिजनों ने उसे उपचार के लिए कदम हॉस्पिटल भिवानी में भर्ती करवाया। शिकायत के आधार पर थाना तोशाम पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत अभियोग दर्ज कर जांच शुरू की थी।

पक्की नौकरी व 26000 न्यूनतम वेतन लागू करने की कर रहे मांग

ग्रामीण सफाईकर्मियों की हड़ताल 20 तक बढ़ी, तेज करेंगे विरोध

24 व 25 मई को नरवाना में कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी के आवास पर महापड़ाव डालने का ऐलान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। लघु सचिवालय परिसर के बाहर धरने के दौरान नारेबाजी करते ग्रामीण सफाई कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

ग्रामीण सफाई कर्मचारी यूनियन हरियाणा के आह्वान पर ग्रामीण सफाई कर्मियों को पक्का करने व 26000 न्यूनतम वेतन सहित अनेक मांगों को लेकर दो दिवसीय हड़ताल दूसरे दिन भी जारी रही और सफाईकर्मियों ने हड़ताल को 20 मई तक बढ़ा दिया हैं। वहीं आगामी दिनों में सफाईकर्मी ने हड़ताल करके ब्लॉक स्तर पर रोष प्रदर्शन करने, 24 व 25 मई को नरवाना में कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी के आवास पर महापड़ाव डालने का ऐलान किया। विरोध प्रदर्शन की अध्यक्षता यूनियन जिला प्रधान राजबीर सिंघानी व संचालन यूनियन के जिला सचिव कुलदीप बड़वा ने किया।

उल्लेखनीय हैं कि ग्रामीण सफाई कर्मियों ने 15 व 16 मई दो दिवसीय हड़ताल लघु सचिवालय के बाहर शुरू की थी। शनिवार को प्रशासन व सरकार की कर्मचारी विरोधी नीति के चलते यूनियन ने हड़ताल को 20 मई तक बढ़ाने का फैसला लिया। इसके साथ ही यूनियन राज्य कमेटी ने 24 व 25 मई को नरवाना में कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी के आवास पर महापड़ाव डालने का निर्णय भी लिया। वहीं यूनियन ने आगामी दिनों में ब्लॉक स्तर पर रोष प्रदर्शन करके सरकार की कर्मचारी विरोधी नीति जनता में उजागर करने की बात कही। विरोध प्रदर्शन को संबोधित करते हुए सीटू एवं यूनियन नेताओं ने कहा कि अनुसूचित जाति की हितैषी होने का दम भरने वाली भाजपा सरकार सबसे ज्यादा उन्हीं का शोषण कर रही है।

प्रदेश के 11000 ग्रामीण सफाई कर्मचारी अपनी बकाया मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे है और झूठे वादे करने वाली भाजपा सरकार ग्रामीण सफाई कर्मियों की सुध भी नहीं ले रही। वक्ताओं ने कहा कि ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को पॉलिसी बनाकर पक्का किया जाए। विरोध प्रदर्शन को सीटू जिला सचिव कॉमरेड अनिल कुमार, सीटू जिला प्रधान कुलदीप बड़वा, सीटू नेता सुखदेव पालवास, किसान नेता कॉमरेड ओमप्रकाश, सर्व कर्मचारी संघ नेता सुमेर आर्य, यूनियन नेता राजबीर सिंघानी, संजय अमीरवास, शनि कुमार, सुमित मुंढाल, मोहनलाल, प्रकाश सिवानी, जयबीर, राजेंद्र, मंजीत, आदि ने संबोधित किया।

ये रहीं मांगें

यूनियन ने कच्चे सफाई कर्मियों को एक कलम से पक्का करने, 31 दिसंबर 2025 के उच्च न्यायालय के आदेश को लागू करने, 400 की आबादी पर एक कर्मचारी की स्थायी भर्ती करने, मुख्यमंत्री द्वारा घोषित 26000 वो 27000 मासिक वेतन लागू करने, वर्दी भत्ता, धुलाई भत्ता व औजारों के भत्ते में बढ़ोतरी करने, एक्सग्रेसिया पॉलिसी लागू कर मृतक कर्मचारी के परिजन को स्थायी नौकरी देने, दुर्घटना में मौत होने पर 50 लाख रूपये व साधारण मौत पर 20 लाख रूपये मुआवजा देने, सेवानिवृत्त पर एकमुश्त 10 लाख रुपये व ग्रेच्यूटी देने की मांग उठाई, ताकि सफाई कर्मचारी के परिवार का गुजर बसर हो सकें।

चेतावनी: मांगें पूरी नहीं हुईं तो और तेज करेंगे आंदोलन

भिवानी। बीडीपीओ कार्यालय के सामने अपनी मांगों को लेकर धरना देते ग्रामीण सफाई कर्मी।

- घोषणा के बाद भी वेतन नहीं बढ़ाने का लगाया आरोप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़ड़ा

ग्रामीण सफाई कर्मचारियों ने विभिन्न मांगों को लेकर चल रही राज्यव्यापी हड़ताल को 20 मई तक बढ़ाने का ऐलान कर दिया है। शनिवार को बीडीओ कार्यालय बाढ़ड़ा पर कर्मचारियों ने धरना-प्रदर्शन करते हुए सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। धरने की अध्यक्षता ब्लॉक प्रधान संजय कुमार जीतपुरा ने की।

इस दौरान सीटू जिला सहसंयोजक सुमेर सिंह तथा यूनियन नेता सुरेश कुमार जेवली ने कहा कि ग्रामीण सफाई कर्मचारी लंबे समय से अपनी जायज मांगों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन सरकार लगातार अनदेखी कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार गरीब, दलित और कर्मचारियों की उपेक्षा कर बड़े पूंजीपति घरानों के हितों को प्राथमिकता दे रही है। वक्ताओं ने कहा कि उच्च न्यायालय के 31 दिसंबर 2025 के फैसले के बावजूद कर्मचारियों को पक्का नहीं किया गया। मुख्यमंत्री सैनी द्वारा घोषित 26 हजार एवं 27 हजार मासिक वेतन, 400 की आबादी पर स्थायी भर्ती और एक्सग्रेशिया नीति जैसी घोषणाएं भी अब तक लागू नहीं हुई हैं। धरने में मौजूद कर्मियों ने चेतावनी दी कि सरकार ने जल्द मांगें नहीं मानीं तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। धरने पर मजदूर नेता रोशनलाल, मनफूल, रमेश, सुरेंद्र सिंह, सुभाष, धर्मवीर, राजकुमार, संदीप व जयभगवान आदि मौजूद रहे।

फ्रेंड्स कॉलोनी में चोरी, कच्छा गिरोह पर संदेह

सीसीटीवी मे कैद हुई चोरी की वारदात, कच्छे में दिखे आरोपी, तलाश में जुटी पुलिस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी में इन दिनों कथित संदिग्ध कच्छा चोर गिरोह के सदस्य रात्रि के समय घरों को निशाना बनाने की कवायद में घूम रहे है। इन लोगो ने भिवानी में दो मकानों को निशाना भी बनाया है। पुलिस जब सीसीटीवी खंगाल रही थी तो उन्हें रात्रि के समय कुछ संधिग्द व्यक्ति कच्छे में घूमते हुए दिखाई दे रहे है। सबसे बड़ी बात ये है कि ये लोग लाठी डंडे भी लिए रहते हैं। पुलिस अब इन लोगों की तलाश में है। पुलिस को लगता है कि ये लोग मध्य प्रदेश के बावरिया गैंग के सदस्य हो सकते है। फ्रेंड्स कॉलोनी में एक मकान में चोरी की वारदात हुई। वारदात के बाद पुलिस को मामले की जानकारी दी गई। कॉलोनी के पार्षद सूर्या भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने घर के आसपास के मकानों पर लगे सीसीटीवी की फुटेज देखी तो हैरान कर देने वाली तस्वीरें दिखाई दीं। कुछ लोग बिना पायजामा पहने सड़कों पर घूम रहे थे। उन लोगों ने हाथों में डंडे लिए हुए थे। सीसीटीवी में दिख रहा है कि वे लोग किसी के घर में झांक रहे हैं। वाक्या करीब पौने चार बजे के आसपास का है। ये सब चीजे सीसीटीवी कैमरें में कैद हो गई।

फिंगर प्रिंट लेकर जांच में जुटी पुलिस

मामले की जानकारी के बाद पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया है यहाँ तक की सीआईए पुलिस भी इन संदिग्ध व्यक्तियों को तलाश रही है। साथ ही पुलिस ने फिंगर प्रींट एक्सप्रेट की टीम को भी मौके पर बुलाया और सबूत एकत्रित किए। पार्षद सूर्या तंवर का कहाँ है की मामले की जानकारी पुलिस को दी है। पुलिस मामले की तफ्तीश कर रही है। पार्षद ने लोगो से अपील की है की वे सावधान रहे। उन्होंने बताया कि अगर इस तरह से कोई संदिग्ध घुमता नजर आए तो तत्काल उसकी जानकारी पुलिस को दी। ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके।

क्या कहते है थाना प्रभारी

थाना शहर प्रभारी जरनेल सिंह का कहना था की शिकायत के आधार पर कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने बताया की सीसीटीवी फुटेज में दिख रहे है की कुछ लोग संधिग्द परिस्थिति में घूम रहे है जिन्होंने पायजामा तक नहीं पहना है। उनको पुलिस तलाश कर रही है।

डेढ लाख की ऑनलाइन ठगी में आरोपी गिरफ्तार

भिवानी। थाना साइबर क्राइम पुलिस ने ऑनलाइन धोखाधड़ी के आरोपी को गिरफ्तार किया है। एक महिला निवासी तिगड़ाना ने शिकायत दर्ज कराई थी कि एक शख्स ने उसके पित को फोन कर कहा कि उसकी लड़की अस्पताल में है। उसके फोन से पेमेंट नहीं हो रहा। उसने कहा कि वह पैसे भेज रहा है वह अस्पताल को पेमेंट कर दें। इस पर उसके पति ने 1,46,318 रुपऐ का पेमेंट कर दिया। बाद में एकाउंट चेक किया तो ठगी का पता चला। गिरफ्तार आरोपी की पहचान अशफाक पुत्र अरशद निवासी माहू, थाना फिरोजपुर झिरका, नूंह के रूप में हुई है।

संदिग्ध परिस्थितियों में छत से गिरने से हाइड्रा चालक की मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

- मृतक के पिता ने लगाया दो लोगों पर हत्या करने का आरोप

गांव खानक में संदिग्ध परिस्थितियों में एक हाइड्रा चालक की छत से गिरने के कारण मौत हो गई। मृतक के पिता ने दो लोगों पर हत्या करने का आरोप लगाया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बड़वा निवासी 28 वर्षीय विनीत खानक में हाइड्रा चालक का कार्य करता था और वहीं किराये के मकान में रहता था। बताया जा रहा है कि रात के समय वह मकान की छत से नीचे गिर गया, जिससे उसकी मौत हो गई। मृतक के पिता रामधारी ने हाइड्रा मालिक विनीत तथा उसके साथ रहने वाले दिलबाग पर हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर दोनों आरोपियों के खिलाफ हत्या की धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी महावीर सिंह ने बताया कि दो व्यक्तियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है तथा पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है।

अब जन्मेंगे मनचाहे डिजाइनर बेबी!

अब तक तो यही माना जाता रहा है कि जन्म लेने वाले बच्चे का रूप, रंग, गुण या उसकी कोई बीमारी प्रकृति ही निर्धारित करती है। लेकिन जेनेटिक इंजीनियरिंग की नई तकनीक से आने वाले समय में मनचाहे यानी कस्टमाइज्ड बेबी जन्म ले सकेंगे। क्या है यह तकनीक, क्या हो सकते हैं इसके फायदे या नुकसान, यहां बता रहे हैं विस्तार से।

{ कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन }

'नमस्कार डॉक्टर साहब! हम एक ऐसा बेबी चाहते हैं, जो हमारी जेनेटिक बीमारियों से दूर रहे। उसका आई क्यू लेवल शानदार हो, चश्मा न लगे उसको, टॉल फिगर हो, कॉम्प्लेक्शन फेयर हो।'

क्या आपने कल्पना की है कि आने वाले दौर में पैरेंट्स किसी फर्टिलिटी क्लीनिक पर जाकर डॉक्टर से कुछ ऐसा कहेंगे? यह मजाक की बात या कोरी कल्पना नहीं है। विज्ञान इतनी तरक्की कर रहा है कि निकट भविष्य में यह संभव होगा। इस तकनीक से पैदा होने वाले बच्चों को 'डिजाइनर बेबी' कहा जाएगा।

क्या है यह तकनीक

डिजाइनर बेबी ऐसा बच्चा होता है, जिसके जेनेटिक स्ट्रक्चर (आनुवंशिक संरचना) को पैदा होने से पहले ही बदल दिया जाता है। यह मुख्य रूप से 'क्रिसपर-केस नाइन' जैसी जीन एडिटिंग तकनीक के जरिए किया जाता है। इसके तहत भ्रूण से खराब जीन कतरकर होने वाले माता-पिता के पसंदीदा गुणों वाले जीन को जोड़ा जा सकता है। ये कस्टम-मेड बच्चे होंगे। वांछनीय गुणों वाले बच्चे पैदा करने यानी बनाने के लिए, होने वाले माता-पिता आईवीएफ क्लीनिक में भ्रूणों का चयन बीमारी के जोखिम के आधार पर कर रहे हैं। इस प्रक्रिया को प्री-इंप्लांटेशन जेनेटिक डायग्नोसिस कहा जाता है। मुख्य रूप से वंशानुगत बीमारियों को रोकने के लिए इसका अभ्यास किया जाता है। इसमें आईवीएफ से बनाए गए भ्रूणों की स्क्रीनिंग की जाती है और माता-पिता उस भ्रूण का चयन करते हैं, जिसे वे एक ऐसे बच्चे के लिए प्रत्यारोपित कर सकते हैं, जिसमें आनुवंशिक विकार के सबसे कम जोखिम होने की भविष्यवाणी की जाती है। इसमें एक एंब्रियो-सेलेक्शन/स्क्रीनिंग कंपनी और आईवीएफ प्रोवाइडर 8-14 दिनों तक रोजाना हार्मोन इंजेक्शन देकर कम से कम 15 अंडे निकालते हैं, जिन्हें पसंद के स्पर्म से फर्टिलाइज किया जाता है। 4-5 दिनों के बाद, एक ब्लास्टोसिस्ट बनता है। यह कोशिकाओं की एक खोखली गेंद जैसी होती है, जिसमें एक अंदरूनी द्रव्य और बाहरी परत होती है। बाहरी परत प्लेसेंटा में विकसित होती है। अंदरूनी द्रव्य भ्रूण बनता है। हर भ्रूण से निकाले गए अंशों की जेनेटिक बीमारी/क्रीमोसोमल असामान्यताओं के लिए स्क्रीनिंग की जाती है और मापे गए हर पैरामीटर के लिए पॉलीजेनिक (कई-जीन) स्कोर दिए जाते हैं। माता-पिता चुनते हैं कि कौन-सा भ्रूण इंप्लांट करना है। दुनिया के सबसे पहले डिजाइनर बेबी होने का दावा वर्ष 2018 में चीन के वैज्ञानिक हे जियानकुई ने किया था, जिन्होंने जुड़वां बच्चियों (लुलु और नाना) के जीन एडिट किए थे।

यूजेनिक्स क्या है

यूजेनिक्स एक ऐसा विचार और पद्धति है, जिसका उद्देश्य मानव आबादी की आनुवंशिक गुणवत्ता में सुधार करना है, जिसमें स्वस्थ और वांछनीय गुणों वाले लोगों के प्रजनन को बढ़ावा दिया जाता है और कम वांछनीय या अवांछनीय गुणों वाले लोगों के प्रजनन को रोका जाता है, जो अकसर जबरन नसबंदी और भेदभावपूर्ण प्रथाओं से जुड़ा रहा है, खासकर नाजी जर्मनी और अमेरिका में। इसे विज्ञान के रूप में खारिज कर दिया गया है।

जीन एडिटिंग के प्रभाव

जीन एडिटिंग के द्वारा डिजाइनर बेबी बनाने के कई प्लस और माइनस परिणाम हो सकते हैं।

बीमारियों से मुक्ति: इस तकनीक का असली उद्देश्य बच्चों को कैंसर, अल्जाइमर और एचआईवी जैसी वंशानुगत बीमारियों से बचाना है।

बनगे सुपर ह्यूमन: जैसे-जैसे तकनीक ज्यादा विकसित होगी भविष्य में वैज्ञानिक ऐसी कोशिश कर सकते हैं, जिससे बच्चे की मांसपेशियों की ताकत और याददाश्त को बढ़ाया जा सकेगा और वे 'सुपर ह्यूमन' बन सकें। कुछ देशों में आईवीएफ क्लीनिक पहले से ही माता-पिता को बच्चे की आंखों का रंग चुनने का विकल्प देने की दिशा में शोध कर रहे हैं। वर्तमान में यह प्रक्रिया इतनी महंगी है कि इसे केवल दुनिया के अमीर लोग ही अपना सकते हैं।

ब्लास्टोसिस्ट क्या है

ब्लास्टोसिस्ट भ्रूण के विकास का एक प्रारंभिक चरण है, जो फर्टिलाइजेशन के लगभग 5-6 दिनों बाद बनता है, जिसमें लगभग 200-300 कोशिकाएं होती हैं और इसमें दो मुख्य भाग होते हैं, आंतरिक कोशिका द्रव्यमान (जो शिशु बनेगा) और ट्रोफोब्लास्ट (जो प्लेसेंटा बनेगा)। यह वह अवस्था होती है, जब भ्रूण गर्भाशय की परत में प्रत्यारोपित होता है, खासकर आईवीएफ प्रक्रियाओं में।

चुनौतियां भी कम नहीं

जीन एडिटिंग के जरिए मनचाहे डिजाइनर बेबी बनाने की तकनीक विकसित होने के कुछ नेगेटिव परिणाम भी भविष्य में देखने को मिल सकते हैं। यदि केवल अमीर लोग ही 'जीनियस' बच्चे पैदा कर पाएंगे, तो समाज में एक नया भेदभाव उत्पन्न हो सकता है। साथ ही जीन एडिटिंग के दीर्घकालिक प्रभाव क्या होंगे, यह अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। एक छोटी-सी गलती बच्चे के स्वास्थ्य पर बहुत भारी पड़ सकती है। उसके जीवन की पूरी दिशा बदल सकती है।

जीन एडिटिंग के जरिए मनचाहे बच्चे पाने के संबंध में एक सवाल यह भी है कि भ्रूणों की एक श्रंखला में से चुनाव या जीन-एडिटेड भ्रूणों के बावजूद, क्या माता-पिता को भ्रूण के गैर-चिकित्सा लक्षणों को चुनने की अनुमति दी जानी चाहिए? क्या जीन को चुनकर/बदलकर विशेषताओं को 'डिजाइन' किया जा सकता है? क्या आप अंततः अपने बच्चे के जेनेटिक कोड को अपनी मर्जी से बना सकते हैं? समाज शास्त्री कहते हैं डिजाइनर बेबी तकनीक मानव जाति के लिए एक वरदान साबित हो सकती है यदि इसका उपयोग केवल जानलेवा बीमारियों को खत्म करने के लिए किया जाए। लेकिन यदि इसे खूबसूरती और ताकत का पैमाना बनाया गया, तो यह मानवता के लिए नई चुनौतियां खड़ी कर सकता है। समाज में एक नए तरह का भेदभाव और विघटन पैदा कर सकता है। कई समाजशास्त्री चिंतकों का मानना है कि जीवन के साथ इस तरह का बदलाव करना प्रकृति के नियमों का उल्लंघन होगा। कुछ वैज्ञानिक चेतावनी देते हैं कि आधुनिक जेनेटिक स्क्रीनिंग और काउंसलिंग का इस्तेमाल माता-पिता पर दबाव बनाने के लिए किया जा सकता है। अगर समाज कुछ खास लक्षणों को बढ़ावा देता है, तो प्रजनन का चुनाव सामाजिक दबाव बन जाता है। व्यवहार, बुद्धिमत्ता या व्यक्तित्व जैसी चीजों के लिए भ्रूण की स्क्रीनिंग करना, पूर्व में सामने आए यूजेनिक्स पद्धति जैसा होगा, जिसमें यह कंट्रोल करने की कोशिश की गई थी कि किसे पैदा होने की इजाजत है।

कहने का सार है कि आने वाले समय में जीन एडिटिंग से डिजाइनर बेबी के जन्म लेने का चलन बढ़ सकता है। लेकिन इसके परिणाम कितने सकारात्मक या नकारात्मक होंगे, यह तो भविष्य में ही पता चलेगा। *

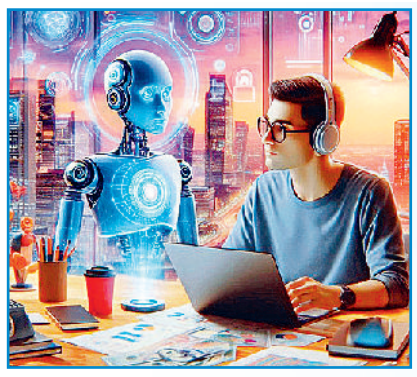

जिस तेजी से तकनीक का दखल बढ़ता जा रहा है, हमारी जीवनशैली आने वाले समय में पूरी तरह बदल जाएगी। आने वाले दिनों में यंगस्टर्स को हाई इनकम वाली कई ऐसी जॉब्स मिलेंगी, जो पूरी तरह हाईटेक होंगी। इनमें से कुछ फ्यूचरिस्टिक जॉब्स पर एक नजर।

यंगस्टर्स को लुभाएंगी फ्यूचरिस्टिक जॉब्स

{ अपकमिंग ट्रेंड }

अंजू जैन

आज के दौर में यंगस्टर्स के लिए करियर की परिभाषा पूरी तरह बदल चुकी है। अब डॉक्टर, इंजीनियर या सरकारी नौकरी ही एकमात्र 'सफल' विकल्प नहीं रह गए हैं। अगर आपमें हुनर है और आप लीक से हटकर सोचने और करने का जज्बा रखते हैं, तो आज का डिजिटल युग आपको शानदार इनकम के मौके दे सकता है। अच्छी बात यह है कि 'फ्यूचरिस्टिक' जॉब्स के लिए आपको किसी बड़े कॉलेज की भारी-भरकम फीस भरकर डिग्री पाने की जरूरत नहीं है। आपमें नई टेक्नोलॉजी सीखने की लगन होनी चाहिए। ऐसे ही कुछ फ्यूचरिस्टिक जॉब्स के बारे में आप भी जानिए, ताकि आने वाले दौर के लिए आप खुद को टेकरेडी बना सकें।

डेटा डिटेक्टिव: करियर की दुनिया में कहा जाता है कि 'डेटा नया हीरा है।' डेटा साइंटिस्ट का काम बिखरे हुए आंकड़ों से अपने लिए काम की जानकारी निकालना है। यह जॉब उन युवाओं के लिए शानदार है, जिनकी गणित और लॉजिक पर पकड़ मजबूत है। इसमें शुरुआती सैलरी ही कई पारंपरिक नौकरियों के टॉप लेवल के बराबर होती है। गूगल खुद कोर्सेरा जैसे प्लेटफॉर्म पर डेटा एनालिटिक्स और साइबर सिक्योरिटी के सर्टिफिकेशन कोर्स कराता है। साथ ही साइबेरी, साइबर सिक्योरिटी संबंधी नई तकनीकें सीखने के लिए यह दुनिया का सबसे बड़ा फ्री कम्युनिटी प्लेटफॉर्म है।

गेमिंग और ई-स्पोर्ट्स: वीडियो गेम अब सिर्फ टाइम पास नहीं रहा। प्रोफेशनल गेमर्स, गेम स्ट्रीमर्स और गेम डेवलपर्स आज लाखों-करोड़ों में खेल रहे हैं। इंटरनेशनल ई-स्पोर्ट्स टूर्नामेंट्स में प्राइज मनी अब किसी क्रिकेट वर्ल्ड कप से कम नहीं होती। अगर आप इसमें अपनी जगह बनाना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। अपना खास फील्ड चुनें। ई-स्पोर्ट्स का मतलब सिर्फ गेम खेलना नहीं है। आप इनमें से अपनी रुचि के अनुसार कई क्षेत्र चुन सकते हैं, जैसे प्रोफेशनल प्लेयर यानी टूर्नामेंट में हिस्सा लेना, कंटेंट क्रिएटर या स्ट्रीमर यानी यूट्यूब या ट्विच पर गेमप्ले दिखाना, गेम एनालिस्ट/कोच यानी गेम की रणनीति समझना, मैनेजमेंट यानी टीम मैनेजर या इवेंट ऑर्गेनाइजर बनना।

आपको इसके लिए जरूरी स्किल्स सीखनी पड़ेगी। किसी एक गेम को चुनें और उसमें एक्सपर्ट बनें। इसके लिए रोजाना प्रैक्टिस और अपनी गलतियों का आकलन करना जरूरी है। इनके साथ-साथ टीम के साथ तालमेल बिठाने के लिए अच्छी बातचीत की कला सीखें। महारत पाने के लिए सबसे जरूरी है तकनीकी ज्ञान।

प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग: चैटजीपीटी जैसे एआई टूल्स के आने से अब 'प्रॉम्प्ट इंजीनियर' की भारी डिमांड हो गई है। इसमें आपको कोडिंग नहीं, बल्कि एआई से सही तरीके से काम करवाने की कला (सही निर्देश देना) आना चाहिए। बड़ी कंपनियां इसके लिए करोड़ों का पैकेज देने को तैयार हैं। इसे सीखने के लिए एंड्रयू एनजी द्वारा संचालित, चैटजीपीटी प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग फॉर डेवलपर्स एक शानदार फ्री कोर्स है। इसके अलावा लर्न प्रॉम्पटिंग एक ओपन-सोर्स गाइड है, जो आपको मुफ्त में एआई से बेहतर तरीके से कम्युनिकेट करना सिखाती है।

कंटेंट क्रिएशन और इंफ्लुएंसर मार्केटिंग: यूट्यूब, इंस्टाग्राम और पॉडकास्ट अब सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि फुल-टाइम बिजनेस बन चुके हैं। एक खास विषय पर अच्छी पकड़ और दर्शकों से जुड़ने का हुनर आपको ब्रांड एंडोर्समेंट के जरिए रातों-रात सेलिब्रिटी और अमीर बना सकता है। फाइनेंस की जानकारी देने वाले फिनफ्लुएंसर और डिजिटल मार्केटिंग का फील्ड भी अच्छा है। डिजिटल मार्केटिंग की बेसिक जानकारी के लिए आप गूगल डिजिटल गैरेज मुफ्त में इस्तेमाल कर सकते हैं।

सस्टेनेबिलिटी कंसल्टेंट: दुनिया अब पर्यावरण को लेकर गंभीर है। कंपनियां ऐसे लोगों को खोजती रहती हैं, जो उन्हें 'ईको-फ्रेंडली' बनने में मदद करें। अगर आप पर्यावरण प्रेमी हैं और बिजनेस की समझ रखते हैं, तो यह क्षेत्र भविष्य का सबसे बड़ा मार्केट है। सस्टेनेबिलिटी कंसल्टेंट वह पेशेवर होता है, जो कंपनियों और संगठनों को पर्यावरण के अनुकूल काम करने और अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की सलाह देता है। इसके लिए संबंधित शैक्षणिक योग्यता जरूरी है। पर्यावरण प्रबंधन या ईएसजी में (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) विशेषज्ञता हासिल करना आपकी प्रोफाइल को बेहतर बनाता है। एक सफल कंसल्टेंट बनने के लिए आपको तकनीकी और सॉफ्ट स्किल्स दोनों की आवश्यकता होती है। जैसे कार्बन उत्सर्जन और पानी के उपयोग जैसे डेटा का विश्लेषण करना आना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार रिपोर्ट तैयार करना आना चाहिए। अपने क्लाइंट के वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए स्थाई व्यावसायिक रणनीतियां बनाने की चतुराई होनी चाहिए। साथ ही आप में अपने क्लाइंट्स को जटिल पर्यावरणीय नीतियों को सरल भाषा में समझाने की कला भी होनी चाहिए। *

{ कविता }

अवतार सिंह अक्षरजीवी

स्लेटीपन

कोई सुख, नहीं होता पूरा सुख
कोई दुख, नहीं होता पूरा दुख
चरित्र आधे-अधूरे होते हैं
भावनाएं-कई रंगों का मिश्रण,
एक कोने पर थोड़ा-सा सफेद
दूसरे किनारे पर जरा-सा काला
इनके बीच में बहुत सारा स्लेटी होता है।
सुख में नुकसान ढूंढ़ लेता है मन
और दुख में आनंद तलाश लेता है,
गीतों में से निकाल सकते हैं कंक्रीट
और राख में भी संगीत देख सकते हैं,
किसी का स्वभाव कैसा भी हो
हमारे अनुकूल हो, बस ठीक है जैसे
गर्मियों का आलोचक है संसार लेकिन
शहर की खाली सड़कें, कम ट्रैफिक
इस ऋतु को बेहतर घोषित करने में
कहीं न कहीं विवश सा कर देता है।

पतझड़

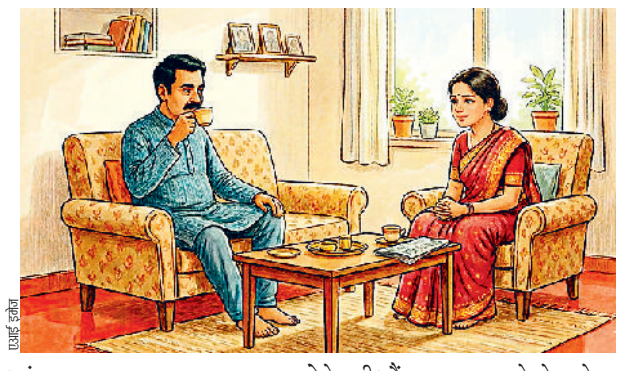

उसकी दरवाजे पर हल्की-सी वह दस्तक मुझे आज भी याद है। दरवाजे की सांकल खोलते ही उसे सामने पाया तो मैं एक बारगी ठगा-सा रह गया। सारा केश विन्यास अस्त-व्यस्त था, चेहरे की लालिमा कहीं खो सी गई थी। आंखों के नीचे स्याही की एक मोटी रेखा ने मुझे झकझोर दिया। मैंने उसके शांत लेकिन अंदर तक उद्वेलित चेहरे को पढ़ने का प्रयास किया। मुझे लगा कि वह नितांत अकेली वन में खड़ी एक प्यासी हिरनी सी है, जो अपने साथी के बिछड़ जाने पर अपनी गोल-गोल चपल आंखों में अतीत के कितने ही पल समेटे हुए है। मैं और वह किंकर्तव्यविमूढ़ से एक-दूसरे को कुछ देर तक निहारते रह गए। तंद्रा तब टूटी, जब बादलों की तेज गड़गड़ाहट ने हमें बारिश होने का अहसास दिलाया। 'आओ न! बाहर क्यों खड़ी हो?' मैंने सहज भाव से उसे अंदर आने का निमंत्रण दिया। ऐसा लगा कि हम वर्षों वर्ष अलग रहने के बावजूद भी भावनात्मक रूप से कहीं जुड़े हुए हैं। गहरी चुप्पी के साथ वह अंदर आ गई और सोफे के एक किनारे पर सिमट कर जड़वत बैठ गई। 'आज अचानक, इस तरह!' मैंने खामोशी को तोड़ने का प्रयास किया। सुनते ही उसकी आंखों में लाल डोरे तैरने लगे, जिन्हें मैंने साफतौर पर महसूस किया। 'कुछ परेशान सी हो! क्या हुआ?' मेरे यह पूछते ही वह संयम खो बैठी। आंखों में बरसों से सिमटा दर्द एकाएक आंसुओं की धार बनकर बह निकला। जब तक मैं कुछ समझ पाता वह फूट-फूटकर रोने लगी। मैं एकटक उसके मन का बोझ हल्का होते देखता रहा। कुछ समय बीता और वह धीरे से कुछ बुदबुदाई। मैंने सुना वह प्रायश्चित कर रही थी। 'मुझे माफ कर दो सुमी! मैं हार गई हूं। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।' उसकी आवाज की कंपकंपी को मैंने सर्द झौंके सा महसूस किया। एक ठंडी सिहरन मेरे तन-बदन में दौड़ गई। कुछ देर बाद मैं चाय बनाकर ले आया। मेरे आग्रह पर उसने चाय का कप उठा लिया। 'याद है मिनी...' मैंने उसे टटोलते हुए कहा, 'मैंने कभी भी अपने हाथ से चाय नहीं बनाई और न ही मैं आज तक ठीक से चाय बनाना सीख सका, क्योंकि तुमने मुझे अपने ऊपर इतना निर्भर कर दिया था। तुम कहती थी कि मेरे होते तुम चाय क्यों बनाओगे? सब कुछ बदल गया इधर कुछ सालों से! देखो तो चाय ठीक बनी है या नहीं? मिनी ने हां में सिर हिलाया और उसकी आंखें मेरे चेहरे पर ठहर गईं। प्रशंसा की यह मूक भाषा मैंने उसकी आंखों में पहली बार पढ़ी थी। 'तुम्हें पता है सुमी! मैं भी इतने बरस, इतनी अकेली रही हूं कि चैन की एक सांस भी न ले सकी। हर घड़ी तुम्हारे साथ बीते पल मुझे कुरेदते रहते। मेरा अहंकार मुझे धीरे-धीरे खोखला करता गया और मैं घुन लगे पेड़ की तरह अंदर से बिल्कुल बेजान हो गई। मुझमें अकेले खड़े रहने की भी ताकत नहीं बची, सुमी मैं टूट गई हूं। मुझे मेरा सहारा वापस दे दो प्लीज। अब मैं तुम्हारे सहारे जीना चाहती हूं।' उसका क्रंदन मुझे भीतर तक सालता चला गया। दस साल पहले वह उस पत्ते की तरह मुझसे अलग हो गई थी, जो पतझड़ के मौसम में एक क्षण में अपनी शाख से अलग हो जाता है। उसने मुड़कर भी नहीं देखा था तब। घर छोड़कर जाते समय उसने अपने दोनों बच्चों रजत और सजल को भी नहीं पुकारा। एक निष्ठुर मां बनकर उसने घर में कदम न रखने की कसम खाई थी और फिर लौटकर नहीं आई। आज दस साल बीतने के बाद वक्त ने करवट ली थी और हम दोनों उसी कमरे में एक बार फिर साथ बैठे हैं। *

-डॉ. सुबोध भटनागर

तस्वीर

{ लघुकथाएं }

पा-पापा आप ये क्या देख रहे हैं?' अशोक के बेटे ने पूछा। 'बेटा एक पुरानी तस्वीर देख रहा हूं। अपने भाई-बहनों की।' आंखें नम करते हुए अशोक ने जवाब दिया। 'कौन-कौन हैं ये?' बेटे ने तस्वीर को गौर से देखते हुए पूछा। तस्वीर को दिखाते हुए अशोक बोले, 'पीली ड्रेस वाली तेरी बड़ी बुआ, पिंक ड्रेस में मंझली बुआ और लाल में जो बैठी है, वो छोटी बुआ।' 'और ये हरी ड्रेस में कौन है?' बेटे ने पूछा। 'अरे यह मेरा छोटा भाई श्यामू यानी तेरा चाचू।' अशोक ने बताया। 'इसका मतलब नीली शर्ट वाले आप ही हैं।' बेटे ने शरारती लहजे में कहा। अशोक ने मुस्कुराते हुए हां में गर्दन हिला दी। 'लेकिन पापा इनको तो मैंने कभी देखा ही नहीं। बुआ और चाचू अब कहां हैं और अपने घर क्यों नहीं आते?' बेटे ने फिर सवाल किया। अशोक ने स्वयं को संभालते हुए कहा, 'हम सबको पिताजी ने यानी तुम्हारे दादाजी ने खूब पढ़ाया-लिखाया लेकिन...' 'लेकिन क्या पापा?' बेटे ने पूछा। 'ये सब विदेश में जाकर बस गए वहीं बड़ी-बड़ी कंपनियों में इंजीनियर हैं।' अशोक ने उदास मन से जवाब दिया। 'आप क्यों नहीं गए विदेश पापा पढ़े-लिखे तो आप भी बहुत है।' बेटे ने पूछा। 'बेटा, मैं भी जाने को तो चला जाता लेकिन बूढ़े मां-बाप की जिम्मेदारी थी मुझ पर... उनकी देखभाल जो करनी थी।' अशोक ने कहा। 'तो क्या बड़े का ही कर्तव्य होता है मां-बाप की सेवा करना, छोटों का नहीं?' बेटे ने थोड़ा गंभीर होते हुए पूछा। 'होता तो है लेकिन कोई समझे तब ना!' उन्होंने लंबी सांस भरते हुए कहा। बेटे का चेहरा उतर गया। उसके उतरे चेहरे को देखकर अशोक ने पूछा, 'अरे तुमने मुंह क्यों लटका लिया?' उसने धीरे से कहा, 'इसका मतलब तो यह हुआ कि मैं बड़ा होकर विदेश नहीं जा सकता।' 'क... क... क्यों... नहीं जा सकते तुम?' अशोक ने आश्चर्य से पूछा। 'मैं तो आपका इकलौता बेटा हूं ना इसलिए। मुझे तो बड़े होने की भूमिका निभानी है, छोटे होने की नहीं।' बेटा यह कहते हुए अपने पापा के गले से लिपट गया। बेड पर रखे एलबम के पन्ने हवा के संग फड़फड़ा रहे थे। *

-गोविंद भारद्वाज

{ पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण }

लोक-संस्कृति का प्रवाह

वर्तमान आधुनिकता के हाहाकारी बयार और पश्चिमी अंधानुकरण के दौर में जब जन सामान्य, अपनी जड़ों से दूर होता जा रहा है, ऐसे में लोक संस्कृति से जुड़ाव की दिशा में किया गया छोटा सा प्रयास भी बहुत मायने रखता है। इस लिहाज से हाल में प्रकाशित हुए 'नवोदित प्रवाह' के लोक संस्कृति विशेषांक की सराहना की जानी चाहिए। इसमें देश के लगभग हर प्रदेश की लोक संस्कृति की बहुरंगी छवि देखी जा सकती है। संस्कृति की महत्ता को रेखांकित करते हुए वरिष्ठ लेखक राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी लिखते हैं, 'संस्कृति जीवन के साथ चलती है, जीवन के प्रवाह में बहती है, जीवन को गति देती है, जीवन को प्रेरित और निर्देशित करती है।' रमई काका पर गंगा प्रसाद शर्मा का लेख, कजली पर कृष्ण कुमार यादव का लेख, लावणी लोकनृत्य पर इंदिरा किसलय का लेख समेत पूर्वोत्तर राज्यों की सांस्कृतिक विरासत पर भी बढ़िया लेख यहां पढ़े जा सकते हैं। बंगाल के लोक साहित्य पर अल्पना सिंह का लेख, छत्तीसगढ़ के लोकगीत और लोकनृत्य पर ममता तिवारी का लेख भी पठनीय है। इनके अलावा 'महुआ घटवारिनः एक अधूरी प्रेम कहानी' (कहानी), 'गर्व या मातम' (लघुकथा) और लोक-सांस्कृतिक रंग में रंगी बुद्धिनाथ मिश्र, आकांक्षा द्विवेदी, कृष्ण बिहारी, उद्भ्रांत की कविताएं विशेष रूप से पठनीय हैं। वरिष्ठ कवि बाल स्वरूप राही के साक्षात्कार ने इस अंक की महत्ता को और बढ़ा दिया है। *

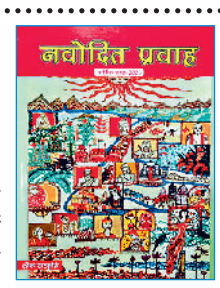

पत्रिका: नवोदित प्रवाह-वार्षिकांक 2026 (लोक संस्कृति विशेष),
संपादक: रजनीश त्रिवेदी 'आलोक', **मूल्य:** 200 रुपए
प्रकाशन स्थल: देहरादून, उत्तराखंड

सुदर्शन सेंड आर्ट म्यूजियम पुरी

ओडिशा के समुद्र तट के पास स्थित इस म्यूजियम की स्थापना मशहूर सेंड आर्टिस्ट सुदर्शन पट्टनायक ने साल 2010 में की थी। इसका उद्देश्य सेंड आर्ट को वैश्विक पहचान दिलाना और सामाजिक संदेशों को कला के माध्यम से प्रस्तुत करना है। यहां रेत से बनी विशाल मूर्तियां प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें भगवान श्री जगन्नाथ, पर्यावरण संरक्षण, विश्व शांति, आध्यात्मिकता और भारतीय संस्कृति से जुड़े विषय प्रमुख होते हैं। रेत जैसी साधारण चीज को अद्भुत कला में बदल देना, इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। सामान्यतः समुद्र तट पर बनाई गई सेंड आर्ट कुछ समय बाद लहरों से नष्ट हो जाती है, लेकिन यहां विशेष तकनीक और केमिकल ट्रीटमेंट की मदद से स्कल्पचरों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जाता है। अपनी इस अनूठी कला के लिए सुदर्शन पट्टनायक को भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सम्मान मिल चुका है। *

काइट म्यूजियम अहमदाबाद

गुजरात के अहमदाबाद में स्थित इस काइट म्यूजियम की स्थापना सन 1985 में भानुभाई शाह की पतंगों के निजी संग्रह से हुई थी। यहां पतंगों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक विविधता देखने को मिलती है। यहां भारत और विदेशों की 125 से अधिक अत्यंत दुर्लभ और कलात्मक पतंगें रखी गई हैं, जिनमें जापान, मलेशिया, कोरिया, अमेरिका जैसे देशों की पतंगे भी शामिल हैं। कुछ पतंगें मिनिएचर आकार की हैं, तो कुछ विशाल और अत्यंत कलात्मक हैं। संग्रहालय में हाथ से चित्रित, मिरर वर्क और ब्लॉक प्रिंट वाली पारंपरिक गुजराती पतंगें भी हैं। यहां एक 16 फीट लंबी पतंग भी है, जिस पर उकेरा गया गरबा डांस आने वाले दर्शकों को बरबस ही अपनी ओर खींचता है। उत्तरायण उत्सव के दौरान यहां बड़ी संख्या में सैलानी आते हैं। *

सुधा कार म्यूजियम हैदराबाद

ऑटोमोबाइल डिजाइनर के. सुधाकर द्वारा तेलंगाना के हैदराबाद में स्थापित यह म्यूजियम, दुनिया का पहला हैंडमेड कार म्यूजियम है। यह भारतीय नवाचार, रचनात्मकता और ऑटोमोबाइल के अनूठे संगम को दर्शाता है। सबसे खास बात है कि यहां प्रदर्शित कारें और बाइक, दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली चीजों के रूपाकार में डिजाइन की गई हैं जैसे- कैमरा, पर्स, जूता, किताब, बर्गर, क्रिकेट बैट, लिपस्टिक, टेबल टेनिस बॉल आदि। सभी गाड़ियां वर्किंग कंडीशन में हैं लेकिन बिक्री के लिए नहीं हैं। यहां दुनिया की सबसे बड़ी तिपहिया साइकिल और सबसे छोटी डबल डेकर बस भी देखी जा सकती है, जिन्हें गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स में भी शामिल किया गया है। हर गाड़ी के साथ उसकी निर्माण प्रक्रिया, लागत, अधिकतम गति आदि की जानकारी भी दी गई है। यह म्यूजियम बच्चों-बड़ों सभी को पसंद आता है। *

{ अमेजिंग / रजनी अरोड़ा } स्पेशलः इंटरनेशनल म्यूजियम-डे, 18 मई

संग्रहालय यानी म्यूजियम ऐसी जगह होती है, जहां इतिहास, कला, संस्कृति, रक्षा या विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह और संरक्षण किया जाता है। इसके अलावा कई संग्रहालयों में यूनिक आइटम्स का संग्रह भी किया जाता है। अपने देश में स्थित कुछ अनोखे संग्रहालयों पर एक नजर।

देश के अनूठे म्यूजियम

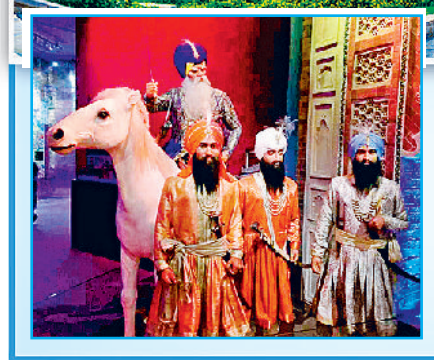

विरासत-ए-खालसा आनंदपुर साहेब

इस संग्रहालय की स्थापना पंजाब में वर्ष 2011 में की गई थी। यहां सिख गुरुओं के जीवन, खालसा पंथ की स्थापना, पंजाब के इतिहास, संस्कृति और धार्मिक संघर्षों को अत्याधुनिक मल्टीमीडिया तकनीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसकी इमारत का अनोखा वास्तुशिल्प भी आकर्षण का केंद्र है। विशाल पेंटिंग्स, मल्टीमीडिया लाइट एंड साउंड शो, यहां आने वाले दर्शकों को ऐतिहासिक घटनाओं का जीवंत अनुभव कराते हैं। इस म्यूजियम की गिनती भारत के तकनीकी तौर पर एडवांस म्यूजियमों में की जाती है। *

नेवल एविएशन म्यूजियम गोवा

साल 1998 में गोवा में स्थापित इस म्यूजियम में कई विंटेज विमान और लड़ाकू विमानों में प्रयोग होने वाले हथियार प्रदर्शित किए गए हैं। साथ ही यहां आईएनएस विराट युद्धपोत का मॉडल भी रखा गया है। इस अनोखे म्यूजियम में एवियाफ्लिक्स थिएटर भी है, जहां पर्यटक नेवल एविएशन के बारे में रोचक जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। भूख लगे तो यहां बने कॉकपिट कैफे में आराम से बैठकर खा-पी भी सकते हैं। *

आरबीआई मॉनेटरी म्यूजियम मुंबई

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा मुंबई में संचालित इस म्यूजियम की स्थापना वर्ष 2004 में की गई थी। यहां मुद्रा से जुड़ी डेढ़ हजार से ज्यादा वस्तुओं का संग्रह है। इस म्यूजियम में छठी सदी से आज तक के सिक्के और नोटों का अच्छा कलेक्शन है। पर्यटक यहां नोटों और सिक्कों के बनने का प्रोसेस भी जान सकते हैं। साथ ही समझ सकते हैं कि करेंसी में किस-किस तरह की सिक्योरिटी फीचर होते हैं। *

इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियंस म्यूजियम बेंगलुरू

2018-19 में कर्नाटक के बेगलुरु में स्थापित यह म्यूजियम, भारत का पहला इंटरएक्टिव म्यूजिक म्यूजियम है। इस म्यूजियम की स्थापना का उद्देश्य भारतीय संगीत की हजारों वर्षों पुरानी परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ प्रस्तुत करना था। यहां भारतीय संगीत के इतिहास, शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, सूफी संगीत, फिल्म संगीत और आधुनिक संगीत की यात्रा को डिजिटल डिस्प्ले, ऑडियो इंस्टालेशन और इंटरएक्टिव तकनीकों के माध्यम से समझाया जाता है। म्यूजियम में तबला, सितार, सरोद, वीणा जैसे वाद्ययंत्रों का भी प्रदर्शन किया गया है। दर्शक यहां हेडफोन, टच स्क्रीन और डिजिटल गैलरी के माध्यम से विभिन्न वाद्ययंत्रों को सुनने और स्वयं बजाने का अनुभव भी कर सकते हैं। *

ट्रिक आर्ट 3-डी म्यूजियम चेन्नई

भारत का पहला ट्रिक आर्ट 3-डी म्यूजियम की स्थापना तमिलनाडु के चेन्नई में कलाकार ए. पी. श्रीधर ने साल 2016 में की थी। यह म्यूजियम फ्रेंच आर्ट फॉर्म-ट्रॉम्प लोय या दृष्टि भ्रमकारी कला यानी (ऑप्टिकल इल्यूजन) और इंटरेक्टिव आर्ट के लिए मशहूर है। यहां की गैलरियों में दर्शकों को भ्रमित कर देने वाली 24 से अधिक इंटरएक्टिव 3-डी पेंटिंग्स प्रदर्शित की गई हैं। जो आने वाले दर्शकों को एक जादुई दुनिया का अहसास कराती हैं। इनके साथ खड़े होकर फोटो लेने पर ऐसा लगता है, मानो ये पेंटिंग्स जीवित हो गई हैं। यहां आने वाले दर्शक उस दृश्य का हिस्सा-सा बन जाते हैं और उनके साथ फोटो खिंचवाए बिना नहीं रहते। ट्रिक आर्ट म्यूजियम की तर्ज पर अब बेंगलुरू में क्लिक आर्ट म्यूजियम और मुंबई में पैराडॉक्स म्यूजियम भी बनाए गए हैं। *

ब्रेन म्यूजियम बेंगलुरू

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज (निमहांस) द्वारा बेगलुरु में स्थापित यह भारत का एकमात्र और विश्व के गिने-चुने ब्रेन म्यूजियमों में से एक है। इस म्यूजियम में 400 से अधिक मानव मस्तिष्क और कई पशु-पक्षियों (जैसे- गाय, मुर्गी, चूहा, बंदर) के मस्तिष्क फॉर्मलीन केमिकल में संरक्षित करके प्रदर्शित किए गए हैं। जिन्हें पिछले 40 वर्षों में वैज्ञानिकों ने एकत्र किया है। इनके अलावा यहां फेफड़े, वोकल बॉक्स, आंतें और मानव कंकाल के नमूने भी हैं। शुरुआत में ये संग्रह मेडिकल छात्रों और शोध के लिए थे, लेकिन अब आम जनता के लिए भी खोले गए हैं। इसका उद्देश्य न्यूरोसाइंस की जानकारी देना, ब्रेन की संरचना, कार्य, विकास और कुछ बीमारियों (जैसे- अल्जाइमर, पार्किंसन, ब्रेन ट्यूमर) से जुड़ी भ्रांतिया दूर करने के साथ अंगदान के प्रति जागरूकता फैलाना है। यहां पर्यटक असली मानव मस्तिष्क को हाथ में लेकर भी देख सकते हैं, जो रोमांच से भर देता है। *

{ विशिष्ट पेड़ / वीना गौतम }

बहुपयोगी इमली का पेड़

बढ़ती लागत, घटती पैदावार और जल संकट के इस दौर में भारत के किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह ऐसी खेती का चुनाव करें, जो कम खर्च में स्थाई और भरोसेमंद आय दे सके। इस नजरिए से इमली का पेड़ एक अच्छा विकल्प है। लंबे जीवनकाल, कम देखभाल और सूखा सहन करने की इमली के पेड़ में अद्भुत क्षमता के कारण इसे एक बार लगाने के बाद सालों साल लगातार उत्पादन देता रहता है। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी इसकी स्थिर मांग बनी रहती है।

आसान है खेतीः खास बात यह है कि इसे खेत की मेढ़ों या बंजर भूमि पर भी उगाया जा सकता है, जो अतिरिक्त आय का स्रोत बन सकता है। भारत के सबसे उपयोगी और बहुउद्देशीय पेड़ों में से एक इमली के पेड़ का वैज्ञानिक नाम टैमरिंड्स इंडिका है। यह मूल रूप से अफ्रीका का पेड़ है, लेकिन प्राचीन काल से ही भारत में इसकी समृद्ध मौजूदगी रही है। दक्षिण भारत में विशेषकर कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, मध्य भारत में छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में तथा महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के अलावा असम, बंगाल और बिहार में भी इमली के पेड़ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

आर्थिक-पर्यावरणीय महत्ताः इमली सिर्फ किसानों की आर्थिक आय का ही मजबूत स्रोत नहीं बन सकता बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण पेड़ है। इमली का पेड़ 15 से 25 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। यह दीर्घजीवी पेड़ है यानी बहुत आसानी से 100 से 200 सालों तक फलता है। इसका तना मजबूत, मोटा और खुरदुरा होता है। इसकी कैनोपी यानी इसका छत्र, घना और फैलावदार होता है। इसमें छोटी-छोटी कंपाउंड पत्तियां पाई जाती हैं। ये पत्तियां हल्की हरी और मुलायम होती हैं। इमली के पेड़ में छोटे पीले रंग के लाल धारियों के साथ फूल लगते हैं, ये अप्रैल से जून के महीने में लगते हैं और फिर लंबी भूरे रंग की फली जिसके अंदर खट्टा-मीठा गूदा होता है, इसके बीज कठोर और चमकीले होते हैं। इमली के पेड़ का मुख्यतः प्रजनन बीज द्वारा होता है। 25 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड का तापमान इसके लिए आदर्श होता है और जिन इलाकों में सालाना 500 से लेकर 1500 मिलीमीटर तक वर्षा होती है, वहां इसे आराम से लगाया जा सकता है। यह मिट्टी का कटाव रोकता है। पशुओं के लिए छाया और चारा देता है। इमली का पेड़ कार्बन अवशोषण के लिहाज से भी महत्वपूर्ण माना जाता है और दीर्घकाल में यह खेती की उत्पादकता भी बढ़ाता है। हाल के सालों में इमली के फलों की मांग देश ही नहीं विदेश में भी काफी ज्यादा हुई है। किसानों के लिए इमली का पेड़ कम लागत में ज्यादा लाभ का शानदार जरिया है। इमली के गूदे का भारत में हर जगह विभिन्न तरह के खाए जाने वाले व्यंजनों में उपयोग किया जाता है, विशेषकर सांभर, चटनी, कढ़ी और कई तरह के पेय पदार्थ में इमली का उपयोग होता है। फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में इसकी अच्छी खासी मांग है। टार्टरिक एसिड, पॉलिश और कई किस्म की दवाइयां इसके इस्तेमाल से बनाई जाती हैं। *

{ सक्सेस फंडा / नेहा जैन }

अगर आप जीवन में कुछ बड़ा, कुछ नया पाने की तमन्ना रखते हैं, तो आपको अपने काम करने के तरीके में भी कुछ नयापन लाना होगा।

बदलें पुरानी वर्किंग स्टाइल
लिखें सक्सेस की नई कहानी

सफलता संसाधनों की अधिकता से नहीं, बल्कि सोच की स्पष्टता और काम करने के स्मार्ट तरीकों से मिलती है। अगर सूझबूझ और स्मार्ट तरीके से काम किया जाए तो आपको हैवी फंडिंग या भारी-भरकम टीम की जरूरत नहीं होती है। आपके काम करने का तरीका ही वह असली फंडा है, जो आपको भीड़ से अलग खड़ा करेगा और सफलता के मुकाम तक पहुंचाएगा। इस बारे में जेसन फ्राइड और डेविड हैनमेयर हैनसन की पुस्तक 'रीवर्क' में डिटेल में बताया गया है।

लोगों पर नहीं काम पर करें फोकसः जब भी आप कोई नया काम करने की सोचते हैं, लोग तरह-तरह की बातें करते हैं और कई बार आपको हतोत्साहित करते हैं। ऐसे में आपको अपनी मेहनत और कौशल पर यकीन करना चाहिए। दूसरों के अनुभवों से डरने के बजाय अपने प्रयोग करने चाहिए।

प्लानिंग से ज्यादा जरूरी एक्शनः अत्यधिक योजनाएं बनाने में समय नष्ट न करें। बस शिद्दत से काम शुरू करें, बाकी चीजें समय के साथ स्पष्ट होती चली जाएंगी। यह समझना होगा कि सिर्फ बातें करने से कुछ नहीं होगा। जो आप वास्तव में बना रहे हैं, उस पर ध्यान केंद्रित करें।

कम में ज्यादा खोजेंः आप कुछ भी करें, बाधाएं तो आएंगी ही। 'मेरे पास पैसे नहीं हैं' या 'मेरी टीम छोटी है' जैसे बहाने बनाना छोड़ें। कम संसाधन आपको समाधान खोजने के लिए मजबूर करते हैं। छोटे बजट में आप फालतू खर्चों से बचते हैं और केवल वही करते हैं, जो सबसे ज्यादा जरूरी है। याद रखिए सीमाएं ही नवाचार की जननी हैं।

अपनी अलग पहचान बनाएंः यदि आप दूसरों की नकल करेंगे, तो भीड़ में खो जाएंगे। अपनी सर्विस या प्रोडक्ट को पर्सनल टच दें। यदि आप काम में अपने अनोखे विचार डालते हैं, तो आपका कॉम्पिटिशन कम हो जाता है। लोग आपकी सर्विस इसलिए लेंगे क्योंकि वह औरों से अलग है।

गलतियों से न डरेंः असफलता अंत नहीं है। असफल होना आपको सिखाता है कि क्या काम नहीं करना है। अपनी गलतियों को सुधारें, गलतियों से सीखें और आगे बढ़ें। याद रखें, काम करने का असली तरीका किताबी नहीं, बल्कि व्यावहारिक अनुभव होता है।

वर्कोहलिक बनने से बचें: बिना आराम किए दिन में 15-18 घंटे काम करना मेहनत नहीं, बल्कि कुप्रबंधन है। इससे आपकी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी पर बुरा असर पड़ सकता है। असली कुशलता कम समय में गुणवत्तापूर्ण परिणाम देने में है। कम समय में स्मार्ट तरीके से काम करना ही असली कुशलता है।

'ना' कहना भी जरूरीः एक साथ बहुत सारे काम करने की कोशिश में हम अकसर औसत दर्जे का परिणाम देते हैं। फालतू सुझावों और ध्यान भटकाने वाली चीजों को 'ना' कहें ताकि आप अपनी कोर स्ट्रेंथ पर ध्यान केंद्रित कर सकें। 'ना' कहना आपको अपने मुख्य लक्ष्य पर केंद्रित रखता है।

अकेलेपन का समय निकालेंः रचनात्मक काम के लिए गहरी एकाग्रता चाहिए। दिन का कोई एक हिस्सा 'साइलेंस जोन' के लिए रखें, जहां कोई आपको डिस्टर्ब न कर सके। यही वह समय है जब आप अपना 'डीप वर्क' पूरा कर पाएंगे। *

हाल में ही सोनी एंटरटेनमेंट चैनल और सोनी लिव पर गेम रियलिटी शो 'तुम हो ना' शुरू हुआ है। बतौर होस्ट इसके जरिए राजीव खंडेलवाल ने लंबे अंतराल के बाद टीवी पर वापसी की है। इस शो को एक्सेप्ट करने की क्या वजह रही? लंबे समय तक टीवी से दूर क्यों रहे? शो और करियर से जुड़े कुछ और सवाल राजीव खंडेलवाल से।

मैं वही काम करना चाहता हूं जो मुझे खुशी दे: राजीव खंडेलवाल

{ खास मुलाकात / आरती सक्सेना }

अभिनेता राजीव खंडेलवाल ने सबसे पहले एकता कपूर के टीवी डेली सोप 'कहीं तो होगा' से प्रसिद्धि पाई। फिर रियलिटी शो 'सच का सामना' के दो सीजन के दौरान उन्हें खूब लोकप्रियता मिली। लंबे गैप के बाद राजीव एक बार फिर महिलाओं के सम्मान और खुशी पर आधारित गेम-रियलिटी शो 'तुम हो ना' होस्ट करते नजर आ रहे हैं। यह शो खासतौर पर उन महिलाओं को लेकर बनाया गया है, जो अपने घर की बॉस हैं और मुश्किलों से भरी जिंदगी जीकर अपना मुकाम बना चुकी हैं। हाल ही में हुई लंबी बातचीत में राजीव खंडेलवाल ने इस शो से जुड़े सवालों के बेबाक अंदाज में जवाब दिए। पेश है इस बातचीत के प्रमुख अंश-

'तुम हो ना' रियलिटी शो में क्या खास लगा, जिस वजह से आपने इसे होस्ट करना एक्सेप्ट किया?

खास वजह यही है कि यह शो महिलाओं पर केंद्रित है। 'तुम हो ना' महिलाओं का शो है, जिसमें कॉमन महिलाएं आती हैं, और अपने दिल की बातें, अपना संघर्ष अपनी खुशी और गम हमारे साथ शेयर करती हैं। हम उनको गेम्स खिलाते हैं, उनका मनोरंजन करते हैं। इस शो में कई मां-बहनें अलग-अलग शहरों से अपने अनुभव लेकर आती हैं और अपना अनुभव हमारे साथ साझा करती हैं।

इस शो के लिए क्या आपने अपने ड्रेसिंग स्टाइल पर भी खास ध्यान दिया है?

हां, मेरी स्टाइलिस्ट ने कहा कि इस शो के लिए अगर हम ड्रेसिंग में महिला की ज्वेलरी का इस्तेमाल करेंगे तो बहुत अच्छा लगेगा। मैंने अपने ड्रेस में महिलाओं की ज्वेलरी जैसे बिंदी, पायल, मांग टीका, झुमके आदि का इस्तेमाल किया है। इसके अलावा बांदनी चुन्नी का भी उपयोग किया है। पहले मैं थोड़ा असमंजस में था, लेकिन बाद में जब लोगों ने तारीफ की तो मुझे लगा कि यह वाकई स्टाइलिश लग रहा है। सच कहूं तो इस शो में इस तरह की ड्रेस पहनने का पर्पस मेरी ओर से महिलाओं को खास अंदाज में ट्रिब्यूट देना है।

'तुम हो ना' से पहले आपने काफी लंबा गैप लिया। इतना लंबा ब्रेक लेने के पीछे क्या खास वजह रही?

मनपसंद रोल नहीं मिल रहा था। एक ही तरह के रोल ऑफर हो रहे थे, जो तीन-चार साल तक चलने वाले डेली सोप के थे। मैं इतने लंबे समय वाले सीरियल नहीं करना चाहता था। मैंने कभी भी काम के लिए 'ना' नहीं कहा, लेकिन अच्छा काम न होने की वजह से मुझे गैप लेना पड़ा। पैसों की ऐसी भी किल्लत नहीं थी कि मुझे अनाप-शनाप काम करना पड़े। मैं वही काम करना चाहता हूं जो मुझे खुशी दे और जिसमें मुझे देखकर दर्शक खुश हो। सोनी का यह शो जब ऑफर हुआ, तो मुझे इसका कॉन्सेप्ट बहुत यूनीक और अच्छा लगा, इसलिए मैंने यह शो एक्सेप्ट कर लिया।

शो 'तुम हो ना' में एक कंटेस्टेंट से बात करते हुए राजीव खंडेलवाल

'सच का सामना' और 'तुम हो ना', दोनों रियलिटी शोज में आपको मुख्य तौर पर क्या फर्क नजर आता है?

दोनों ही शोज रियलिटी से जुड़े हैं। दोनों में ही आम लोग पार्टिसिपेट करते हैं। फर्क यह है कि 'सच का सामना' में आम लोगों ने अपनी जिंदगी के कड़वे-सच्चे अनुभवों के बारे में बताया, जबकि 'तुम हो ना' शो में उन आम महिलाओं की कहानी है, जिन्होंने अपना जीवन अपने परिवार को समर्पित करके परिवार की स्टार बनीं। वह घर की मांएं, बेटियां और बहनें हैं, जिनकी मर्जी के बगैर घर में कुछ नहीं होता। 'सच का सामना' को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। रिलेटेबल और अलग हटके कॉन्सेप्ट होने के कारण 'तुम हो ना' को भी दर्शक खूब पसंद कर रहे हैं।

आपने कुछ समय पूर्व एक वेब सीरीज भी की 'अमर विश्वास', जो कोर्ट रूम ड्रामा पर केंद्रित है। क्या यह सच है कि अब आपको टीवी डेली सोप से ज्यादा वेब सीरीज में काम करना पसंद है?

नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मैं एक एक्टर हूं और मुझे जहां अच्छा रोल मिलेगा, मैं करना चाहूंगा, फिर चाहे वह फिल्म हो, टीवी हो, वेब सीरीज या थिएटर ही क्यों ना हो। मैं वह सब काम करूंगा, जिसमें मेरी दिलचस्पी है, जैसे कि थिएटर करने में मुझे सबसे ज्यादा मजा आता है। क्योंकि वहां पर लाइव ऑडियंस मिलती है।

आपने फिल्म, टीवी और वेब सीरीज के अलावा थिएटर भी किया है?

हां, मैंने एक थिएटर किया था 'कोर्ट मार्शल' जो जी-टीवी के लिए था। इसमें मैंने वकील की भूमिका निभाई थी। लाइव ऑडियंस के सामने आधा-आधा घंटे के दो भाग में मेरा परफॉर्मेंस था। लाइव ऑडियंस के अलावा एनएसडी के थिएटर कलाकारों ने जब मेरी एक्टिंग की तारीफ की तो मुझे बहुत खुशी और संतुष्टि मिली। मेरा मानना है कि थिएटर में किया गया अभिनय सबसे मुश्किल होता है, बावजूद इसके थिएटर के कलाकारों को कोई अवार्ड नहीं मिलता, इस बात का मुझे दुःख है। *

घर की महिलाएं होती हैं रियल स्टार

'तुम हो ना' महिलाओं पर केंद्रित शो है, जिसे राजीव होस्ट कर रहे हैं। उनकी पर्सनल लाईफ में महिलाओं की क्या भूमिका रही है, इस बारे में पूछने पर वह बताते हैं, 'मेरी जिंदगी में बचपन से लेकर आज तक महिलाओं का प्यार मां, बहन और पत्नी के रूप में हमेशा रहा है। मेरे पिता मिलिट्री में थे इसलिए मैंने अपनी मां के साथ बहुत वक्त बिताया है। आज वह नहीं हैं मेरे साथ लेकिन उनका बहुत बड़ा योगदान मेरे जीवन में है। अच्छे संस्कार और अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा और सीख मुझे मेरी मां से मिली। महिलाओं के सम्मान में मुझे यही कहना है कि जो चमकते हैं, सिर्फ वही स्टार नहीं होते! घर की महिला सदस्य रियल स्टार होती हैं, जो हमें बचपन से सपोर्ट देती हैं, एक अच्छा इंसान बनाती हैं, हमें आगे बढ़ने का हौसला देती हैं।